"उम्मते मुस्लिमा के हालात, असरी तक़ाज़े और दावते फ़िक्र"

अफ़कार

पार्ट : 06

मौज़ूआत

1. इस्लाम और इश्तिराकियत
2. सोशल मीडिया और बहिकते नौजवान
3. माज़ी और हाल के कायेदीन
4. इस्लाम में पड़ोसी के हुक़ूक़
5. निकाह वक़्त की अहम ज़रुरत
6. मुस्लिम जानी व माली तहफ्फुज़ के लिए ज़रूरी इक़्दामात
7. भारती मुसलमानों के सियासी हालात
8. मुहर्रम उल हराम की मुरव्वजह बिद्आत व ख़ुराफ़ात
9. फितरत क्या है?
10. बदमज़हब मौलवी और हमारी अ़वाम

नाशिर:

तहरीक निज़ामे मुस्तफा ﷺ

www.nizamemustafa.in

आज़ादी ए अफ़कार से है उनकी तबाही

रखते नहीं जो फ़िक्रो तदब्बुर का सलीक़ा

अफ़कार

[हिंदी पार्ट: 06]

नाशिर:

तहरीक निज़ामे मुस्तफा

www.nizamemustafa.in

Book Name: AFKAR PART 6

Language: Hindi

Roman Translation: Muhammad Saqib & Junaid Qadri

Hijri Date: 03 Rabi ul Awwal 1443 H

English Date: 10 October 2021(Sunday)

Publisher: Tehreek Nizam e Mustafa (India) or TNM Official

Any Query, contact us: 9675801762 & 9720315389

Read another books, visit: https://www.nizamemustafa.in/

Also follow us on: Facebook ǀ Instagram ǀ Youtube ǀ Twitter

About Us:

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized. It is supplication to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

TNM OFFICIAL

फेहरिस्त

पेज न०

पेशे लफ़्ज़ 04

अफ़्कार आला हज़रत के मिशन की एक खूबसूरत सी कड़ी है। 06

1.इस्लाम और इश्तिराकियत **08**

अल्लामा सय्यद अहमद सईद काज़मी

2.सोशल मीडिया और बहकते नौजवान **25**

गुलाम मुस्तफा नईमी

3.माज़ी और हाल के क़ायेदीन **30**

फरदीन अहमद ख़ान रज़वी

4.इस्लाम में पड़ोसी के हुक़ूक़ **36**

मुहम्मद फ़ैज़ुल आरफ़ीन रज़वी

5.निकाह! वक़्त की अहम ज़रूरत **41**

नाज़िश मदनी मुरादाबादी

6.मुस्लिम जानी और माली तहफ्फुज़ के लिए ज़रूरी इक़दामात **45**

मुहम्मद आदिल रज़ा मातुरीदी

7.भारतीय मुसलमानों के सियासी हालात **51**

तारिक़ अनवर मिस्बाही

8.मोहर्रम उल हराम की मुरव्वजह बिदआत और खुराफात **56**

मुहम्मद फिरोज़ आलम अ़लाई

9.फितरत क्या है? **62**

अनस बन्दियालवी

10.बद मज़हब मौलवी और हमारी अवाम **68**

मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

पेशे लफ़्ज़

कुव्वते फिक्रो अमल पहले फना होती है

फिर किसी क़ौम की शौकत पर ज़वाल आता है।

उम्मत ए मुस्लिमा के मौजूदा हालात किसी से पोशीदा नहीं है। हुकूमत इनके पास नहीं, इक़्तिदारा इनका ख़त्म हो चुका लेकिन एक चीज़ इस उम्मत के पास बाकी थी जिसे फिक्र कहते हैं जिस फिक्र को ले कर ये उम्मत मेहनत और मशक्कत कर के अपने दुश्मन को खाक में मिला सकती थी लेकिन अब वो फिक्र ही इस कौम के दिलों से फ़ना होती जा रही है और ये कौम अगियार की गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ चुकी है सब कुछ ख़त्म हो चुका है फिर भी हमारे हालात क्या हैं? वही गुनाहों में लुथड़ी ज़िंदगी जीते जा रहे हैं।

अरे ये तो वक़्त अल्लाह की बारगाह में रो रो कर गिड़गिड़ा कर माफ़ी मांगने का था कि हम अल्लाह तआला से अर्ज़ गुज़ार होते कि अल्लाह हमें माफ़ फरमा दे। हमें दर गुजर फरमा दे। हम अपने गुनाहों से तौबा करते हैं हमने तेरे एहकामात की पाबंदी नहीं की इसलिये हम पर ये मुसीबतें आई हुई हैं। ये तो वक़्त अपने प्यारे नबी ﷺ की बारगाह में रुजूअ़ करने का था और आप ﷺ के सदके अल्लाह से दुआ करने का था लेकिन हम गफलत में मुब्तिला हैं हम वही कर रहे हैं जो हमरा नफ्स हम से कह रहा है।

इस मैग्ज़ीन को नशर करने का मक़सद सिर्फ और सिर्फ ये है कि उम्मत ए मुस्लिमा की फिक्र को नई ताज़गी दी जाए और जो बुराइयाँ और नफरतें हमारी क़ौम के दरमियान पनप रही हैं और बुजदिली हमारा शिआर बन चुकी है इन सब को ख़त्म करने की कोशिश की जाए ये तभी हो सकता है जब मुआशिरे का हर फर्द बुराइयों को मिटाने के लिए जद्दो जिहद करे और उसको अपना एक अहम फर्ज़ समझ कर काम करे फिर वो दिन दूर नहीं जिस दिन हम अपने खोए हुख वक़ार वापस पा लेंगे, ज़रूरत है कौम के फिक्रो अमल पर काम करने की।

क़ारेईन से गुज़ारिश है कि इस मैग्ज़ीन को पढ़ने तक ही महदूद न रखें बल्कि इससे सबक हासिल कर अपनी ज़िन्दगी में इस्लाम के मुताबिक अमल करने की ज़रूरत है इस मैग्ज़ीन को नशर करने का मकसद तभी हासिल हो सकता है जब इसको पढ़ने वाला अल्लाह की तौफीक़ से इन तालीमात पर अमल पैरा हो अल्लाह हमारा हामी और नासिर हो।

मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

अफ़कार आला हज़रत के मिशन की एक खूबसूरत सी कड़ी है।

: मौलाना शहज़ाद हुसैन बरकाती साहब क़िब्ला

दारूल इफ्ता हिज़्बुल अहनाफ, देहरादून उत्तराखण्ड

तदबीर के दस्ते ज़रीं से तकदीर दरखशां होती है,

कुदरत भी मदद फरमाती है जब कोशिशे इंसां होती है।

अलहम्दुल्लिलाह! तहरीक निज़ामे मुस्तफ़ा ﷺ की जानिब से शाया होने वाली अफ़कार मैग्ज़ीन का पहला दूसरा तीसरा और चौथा हिस्सा नज़र से गुज़रा, बेहद खुशी हुई अफ़कार उलामा ए अहले सुन्नत की पाकीज़ा तहरीरों से मुजय्यन है बिलाशुबह ये आला हज़रत के मिशन की एक खूबसूरत सी कड़ी है उनके हसीन ख़्वाबों की बहुत प्यारी ताबीर है।

कौम ए मुस्लिम जो धीरे धीरे अपने असबाक़ भूलती चली जा रही है अफ़कार उन्हें याद करवाने के लिए तन्हा काफी है। इस मैग्ज़ीन ने जिंदगी के हर शोबे पर रोशनी डाली है और तारीकियों को दूर करने की भर पूर कोशिश की इसमें कुरआन की तालीम भी है और हदीसों की रोशनी भी इसमें रहज़नों के लिए रहबरी का सबक है इसमें बुजदिलों के लिए बहादुरी का दर्स, अफ़कार जहेज़ के लालची लोगों के मुँह पर एक ज़ोरदार तमाचा है।

क़ौमे मुस्लिम और इल्म के दरमियान बढ़ती हुई दूरी के ख़ात्मे का ज़रिया है असरी तक़ाज़ों पर गहरी नज़र रखने वाली ये मैग्ज़ीन सोये हुए लोगों को झिंझोड़ कर रख देती है। हमसफीरों से गुज़ारिश है कि एक अच्छे मुआशिरे की तशकील के लिए बदतरीन हालात को बेहतरीन बनाने के लिए अफ़कार का मुतालआ करते रहें।

اللهم اني أسألك العفو و العافية في الدين و الدنيا و الآخرة لي و لجميع المؤمنين
والمؤمنات و المسلمين و المسلمات

इस्लाम और इश्तिराकियत

अज़: ग़ज़ाली ए ज़मां अल्लामा सय्यद अहमद सईद काज़मी अलैह रहमा

कोई ज़ी शऊर इन्सान इस हक़ीक़त से इंकार नहीं कर सकता के दुनिया का इक़तिसादी और मुआशी निज़ाम दौलत के जायज़ हुसूल और और उसकी सही तक़सीम पर मौक़ूफ़ है। मौक़ूफ अलैह का फ़ुक़दान मौक़ूफ़ के बुतलान का मूजिब होता है।

इस दौरे पुर-आशोब में इक़तिसादी और मुआशी निज़ाम की खराबियों की वजह सिर्फ यह है कि न दौलत का हुसूल जायज़ तरीक़े से हो रहा है न उसकी तक़सीम सही तौर पर की जा रही है।

इफ़रात व तफ़रीत का बाज़ार गर्म है कहीं सरमाया परस्ती और जागीरदारी का तसल्लुत है कहीं इश्तिराकियत और कम्यूनिज़्म का दौर दौरा।

जब यूरोप की चालाक व अय्यार बल्कि ज़ालिम व सफ़्फ़ाक सरमाया परस्त कौमों ने दौलत को अमीरों में महदूद कर दिया और दुनिया के कमज़ोर इंसानों को अपनी ग़ुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ कर ज़ालिमाना क़ुव्वत के साथ उनकी आवाज़ को दबा दिया उनके एहसासात व जज़्बात को कुचल दिया और खटमलों की तरह उनका ख़ून चूस कर उनकी दौलत बटोरी तो उन मज़लूमों के दिल में

ठेस लगी। उनके जले हुए दिल और सूखे हुए हलक़ से आह निकली मगर ग़ुरबत व मज़्लूमियत के मारे हुए इंसानों की आवाज़ में इतनी ताक़त कहां थी के वह सरमाया परस्ती के बनाए हुए जेल ख़ाने की मज़बूत आहनी दीवारों से बाहर जा सकती। वह उठी और उठते हुए कमरशिकिस्ता मज़दूर की तरह गिर पड़ी और सरमाया परस्ती के भेड़िए उन मज़लूम भेड़ों के हक़ से बदस्तूर अपना मुंह रंगते रहे। जब मज़लूम ग़रीब का पैमाना ए सब्र लबरेज़ हो गया तो ग़ैरते इलाही जोश में आई और उसने कम्यूनिज़्म का अज़ाब नाज़िल कर दिया जो कि सांपों के फन कुचलता हुआ और नाजायज़ जागीरदारी के भेड़ियों के बड़े बड़े पेशों को फाड़ता हुआ आंधी की तरह चला आ रहा है और वह वक़्त दूर नहीं के ग़रीबों का ख़ून पीने वाले इस ज़ालिम व सफ़्फ़ाक गिरोह का एक एक फ़र्द अपने कैफ़रे किरदार को पहुंचेगा। ख़ूब याद रखिए कम्यूनिज़्म अज़ाब ए इलाही है और अज़ाब इरतकाबे जराइम का ही नतीजा है।

सरमाया परस्ती और जागीरदारी का नाजायज़ निज़ाम:

जिस चीज़ की बुनियाद ही ग़लत होगी उसका अंजाम किसी तरह भी सही नहीं हो सकता। सरमाया परस्ती की बुनियाद दौलत का नाजायज़ हुसूल है। जब हुसूले दौलत ही ग़लत है तो उसकी तक़सीम क्योंकर सही हो सकती है जो क़ौम सरमाया परस्ती के ज़रिए कम्यूनिज़्म की रोकथाम करना चाहती है वो सख़्त

ग़लती में मुब्तिला है। उसको यह मालूम नहीं कि कम्यूनिज़्म का मर्ज़ सरमाया परस्ती से पैदा हुआ है।

सरमाया परस्तों ने जब नाजायज़ और ज़ालिमाना तरीकों से आवाम ग़ुरबा का ख़ून चूसा और मज़दूरों के गाढ़े पसीने की कमाई से अपनी तिजोरियां भरीं, ग़रीब मज़दूर को अपना ख़ून और पसीना एक कर देने के बावजूद भी तन के लिए कपड़ा और पेट के लिए टुकड़ा नसीब न हुआ उनके बच्चे सूखी रोटी के एक एक टुकड़े को तरसते रहे। फ़ाक़ों ने उन्हें मुर्दा बना दिया और उसको मेहनत व मज़दूरी का सिला इस हालत में मिलता है के वो बीमार पड़ जाए तो दवा नहीं, मर जाए तो कफ़न नहीं, और मरने के बाद उसके अहलो अयाल भीख मांग मांग कर गुज़ारा करें। बच्चों की तालीम का इज़ाफा नहीं, और उन बेरहम सरमाया परस्तों और जागीरदारों को भी यह ख़्याल न आया के जिन मज़दूरों, मुज़ारेओं और मुलाज़िमों की कुव्वतें बाज़ू के ज़रिए से कमाई हुई दौलत से हमारे ख़ज़ाने भरपूर हैं जिन की तकलीफें हमारे ऐशो आराम का मूजिब हैं जिनके कमज़ोर जिस्म हमारे बेपनाह मोटापे का सबब हैं जिन का ख़ून पी कर हम इस क़दर मोटे हो गए हैं के ज़मीन हमारे बोझ से पनाह मांगती है।

उन ग़रीबों को भी उनकी हासिल करदा दौलत में से ज़्यादा नहीं तो इतना ही दे दें जिससे उनके तन, पेट का गुज़ारा हो जाए और उनके फाकों के मारे हुए बच्चों की क़ुव्वत ला-यमूत हो सके।

इस संगदिल तब्क़े ने यह जानते हुए के हमारी दौलत व इज़्ज़त, राहत व फ़रहत सब कुछ इन ग़रीबों के सदक़े है, कभी उनके हाल पर रहम न किया बल्कि हमेशा उनको पामाल करने और कुचलने की कोशिश की और उनकी कमाई हुई दौलत पर सरमायाकार सांप बने बैठे रहे तो इसका नतीजा और रद्दे अमल लाज़िमी तौर पर यही हो सकता था के मज़लूम और ग़रीब मज़दूर के दिल में इस ख़ूंखार तब्क़े के ख़िलाफ़ एक ख़ौफनाक जज़्बा ए इंतकाम पैदा हो और वह सरमाया परस्ती के ख़िलाफ़ एक ज़बरदस्त महाज़े जंग क़ायम कर दे। चुनांचे ऐसा ही हुआ इस जज़्बा ए इंतक़ाम ने मज़लूम और ग़रीब मज़दूरों के दिल व दिमाग़ को इस दर्जा मुतास्सिर और माऊफ़ कर दिया के वह बेचारा अक़्ल व ख़िर्द से बेगाना होकर जादहे एतिदाल से दूर जा पड़ा और जोशे इंतिक़ाम में ऐसा मग़लूब-उल-ग़ज़ब हुआ के दोस्त दुश्मन की तमीज़ किए बग़ैर उसने सबको एक ही लाठी से हांकना शुरू कर दिया।

मिल्कियत और सरमाया कारी का तसव्वुर उसके लिए हौआ बन गया और नाजायज़ जागीरदारी और सरमाया परस्ती की अदावत ने उसे जायज़ मिल्कियत और जागीरदारी की मुख़ालिफ़त पर भी मजबूर कर दिया और वो अपने जज़्बात की रो में ऐसा बहा के उसने इस्लाम के ख़ूबसूरत और हसीन इक़्तिसादी व मुआशरती निज़ाम को भी पसे पुश्त डाल दिया। इस्लामी निज़ाम के हसीन चेहरे के नूरानी ख़द्दो ख़ाल उसकी निगाहों से ओझल हो गए और वो राहे सवाब से भटक गया और उसने अपनी आंखों पर इनाद की पट्टी बांध कर तालीमाते

रब्बानी और वही ए आसमानी के ख़िलाफ़ एक नई तहरीक की बुनियाद रख दी जिसका नाम इश्तिराकियत है अब आप ही बताएं के जो इश्तिराकियत सरमाया दारी से पैदा हुई है वह सरमाया परस्ती को फ़रोग़ देने से क्योंकर रुक सकती है।

इश्तराकियत क्या है?

इश्तराकियत उस तहरीक का नाम है जो शख़्सी और इनफ़िरादी मिल्कियत को मिटा कर हुसूले दौलत के तमाम असबाब व ज़राए और लोगों की इज्तिमाई जद्दोजहद से हासिल शुदा दौलत की तक़सीम को हुकूमत के हवाले कर देना चाहती है ताकि मजमूई दौलत तमाम अफ़राद पर अदलो इंसाफ़ के साथ तक़सीम हो सके। इश्तराकियत मुआशी ऊंच-नीच और तब्क़ाती इम्तियाज़ात, अमीर व ग़रीब के तफ़ावुत की सख़्त दुश्मन है। वह एक ऐसी जमाअ़त को बरसरे इक़तिदार लाने की हामी है जिसमें तबक़ों का कोई वुजूद न हो इसलिए के इश्तिराकी नज़रिए के मुताबिक़ तब्क़ाती इम्तियाज़ दुनिया में ज़ुल्म और ख़ूंरेज़ी का संगे बुनियाद है।

जहां तक असल मक़सद का ताल्लुक़ है क़रीब क़रीब तमाम इश्तिराकी मुत्तफ़िक़ हैं लेकिन हुसूले मक़सद के तरीक़ा ए कार में उनके माबैन शदीद इख़्तिलाफ़ पाए जाते हैं बाज़ इश्तराकियों की राय है के आहिस्ता आहिस्ता इस्लाह की जाए। जिसकी सूरत यह है के मौजूदा जमहूरी हुकूमतों को बरक़रार रखते हुए इश्तराकियत के हामियों को उन पर कब्ज़ा कर लेना चाहिए और अपने

इक़्तिदार को काम में लाकर तदरीजी तौर पर इस बात की कोशिश करनी चाहिए के शख़्सी मिल्कियत महदूद होते होते बिल्कुल ख़त्म हो जाए ताकि मजमूयी दौलत अफ़रादे मुल्क पर मुसावियाना तरीक़े से तक़सीम हो सके।

जब तक तब्क़ाती इम्तियाज़ और मुआशी तफ़ावुत बाक़ी रहे उस वक़्त तक हुकूमत का बरक़रार रहना भी ज़रूरी है और जब तक इश्तिराकियत का पूरा पूरा तसल्लुत हो जाए और इम्तियाज़ व तफ़ावुत ए मज़कूर का नामो निशान बाक़ी न रहे तो फिर हुकूमत की भी ज़रूरत नहीं बल्कि ऐसी सूरत में निज़ाम ए हुकूमत ख़ुद ब ख़ुद ख़त्म हो जाएगा। इस नज़रिए को इरतिक़ायी इश्तराकियत कहा जाता है।

इसके मुक़ाबले में बाज़ इश्तराकियों की राय यह है के मौजूदा जमहूरी तरीक़ों में से किसी हुकूमत को बरक़रार रखना हुसूले मक़सद के लिए निहायत मुज़िर बल्कि असल मक़सद के मनाफ़ी है। इसलिए तमाम मौजूदा जमहूरी निज़ामों को मिटाना ज़रूरी है। इसके बग़ैर इश्तिराकियत का ग़ल्बा व तसल्लुत किसी तरह नहीं हो सकता। इसी नज़रिए का नाम इंकलाबी इश्तराकियत या कम्यूनिज़्म है।

कम्यूनिज़्म के हामी कम्युनिस्ट कहलाते हैं कम्युनिस्ट हुसूले मक़सद में तदरीज या आहिस्तगी के क़ायल नहीं। यह लोग जमहूरी निज़ाम के बेख़ो बुन उखाड़ कर उसका नामो निशान तक मिटा देना चाहते हैं। सरमाया परस्ती और इश्तिराकियत दोनों का मुनतहा ए नज़र उसूली तौर पर माद्दी व जिस्मानी खुशहाली और लज़्ज़त परस्ती के सिवा कुछ और नहीं। फ़र्क सिर्फ़ इतना है के

सरमाया परस्तों का तब्क़ा मख़्सूस गिरोह के ऐशो आराम का मुतामन्नी है और इश्तिराकी जमाअ़त तब्क़ाती पाबंदियों से बालातर होकर बिला इम्तियाज़ हर फ़र्द के लिए राहतो आराम हासिल करने की मुद्दयी है। इसी वजह से अमीरों और जागीरदारों के मा-सिवा तमाम लोग सरमाया परस्ती के निज़ाम को इंतिहाई नफ़रत से देखते हैं (और आम तौर पर इश्तिराकी निज़ाम को पसंदीदा निगाहों से देखा जाता है)।

इश्तिराकी निज़ाम की मक़बूलियत ए आम्मा से मुतास्सिर होकर बाज़ कम-फ़हम और नाआक़िबत अंदेश मुसलमानों ने भी इश्तिराकियत के सामने हथियार डाल दिए और उन्होंने इस्लाम को इश्तिराकियत के सांचे में ढालने की नापाक कोशिश की।

उन्होंने ऐड़ी चोटी का ज़ोर इस बात पर सर्फ कर दिया के क़ुरआने करीम और अहादीस की रोशनी में शख़्सी व इनफ़िरादी मिल्कियत को नाजायज़ साबित किया जाए और इसी तरह इस्लाम, इश्तिराकियत में तब्दील हो कर रह जाए। हालांकि अगर गहरी नज़र से देखा जाए तो इस्लाम और इश्तराकियत का इत्तेहाद किसी नुक़्ते पर नहीं हो सकता। इश्तराकियत का संगे बुनियाद माद्दा परस्ती और शिकम-परवरी है। इश्तिराकियों का दावा है कि दुनिया में जिस क़दर अदयान व मिलल और मज़ाहिब पाए जाते हैं वो मुआशी निज़ाम की ख़राबी और तब्क़ा-वारियत की वजह से पैदा हुए हैं।

इश्तिराकियत का मुन्तहा ए मक़सूद इसके सिवा कुछ नहीं के दुनिया में कोई भूखा न रहे और तमाम लोगों की जिस्मानी ज़रूरतें बराबरी के साथ पूरी होती रहें और इस राह में जितनी रुकावटें हैं उन सबको ख़त्म कर दिया जाए। इश्तिराकियत की नज़र में सबसे बड़ी रुकावट मज़हब और तब्क़ा-वारियत है। यही वजह है के तरीक़ा ए निकाह व अज़दवाज भी इश्तिराकी नुक़्ता ए निगाह के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। इश्तिराकियों के नज़दीक इंसानी ज़रूरत की हर चीज़ तमाम इंसानों में बराबर मुश्तरक है। इसलिए वो तमाम दुनिया की औरतों को तमाम दुनिया के मर्दों के लिए मुश्तरक समझते हैं। जब यह बात वाज़ेह हो गई के इश्तिराकियत की नज़र में इस आलम ए माद्दियात के अलावा और कुछ नहीं और मुक़द्दस इस्लाम का बुनियादी नुक़्ता इस आलमे रंगो-बू से बहुत दूर, ईमान बिल-ग़ैब है तो फिर इश्तिराकियत को इस्लाम के साथ किस तरह मख़्लूत किया जा सकता है और इन दोनों का सुलह क्योंकर हो सकती है?

इश्तिराकियत की बुनियादी उसूल पर तन्क़ीद:

नाज़िरीन को मालूम हो चुका है के इश्तिराकियत का बुनियादी उसूल तब्क़ाती इम्तियाज़ को मिटाना है लेकिन अक़्ले सलीम की रौशनी में यह उसूल क़ानूने फ़ितरत के ख़िलाफ़ और नामुमकिन-उल-हुसूल है।

हमने माना के इश्तिराकी, दुनिया में माल व दौलत के लिहाज़ से तमाम इंसानों को बर्बाद कर देंगे लेकिन तबयी और फ़ितरी इम्तियाज़ात तो वह किसी तरह

नहीं उठा सकते मसलन एक शख़्स आलिम है दूसरा जाहिल, एक अक़लमंद है दूसरा बेवकूफ, एक पाकीज़ा अख़लाक़ से मुत्तसिफ़ है तो दूसरा बदअख़लाक़।

इसी तरह फ़न्नी किरदार के लिहाज़ से इंसानों में नुमायां तौर पर इम्तियाज़ व तफ़ावुत पाया जाता है। अला हाज़ल क़यास इंसानों के मुहर्रिकाते तबयी बिदाहतन मुख्तलिफ़ हैं।

ऐसी सूरत में क्या यह अम्र यक़ीनी नहीं के जो लोग एक क़िस्म की सिफ़ात के हामिल हों वो तक़ाज़ा ए फ़ितरत रफ़्ता रफ़्ता एक तब्क़ा की सूरत इख़्तियार कर लें और इसी तरह तब्क़ाती इम्तियाज़ात क़ायम हो जाएं। इसलिए इश्तिराकी उसूल के ग़लत होने में अदना तरद्दुद बाक़ी नहीं रहता।

हयाते इंसानी का मक़सद शिकम परवरी क़रार देना इंसानियत को हैवानियत में तब्दील कर देना नहीं तो और क्या है?

इश्तराकियत के मुक़ाबले में इस्लामी नज़रिया:

अब आइए इसके बामुक़ाबिल मुक़द्दस इस्लाम के नज़रिए को मुलाहिज़ा फ़रमाइए जो फितरत ए इंसानी के ऐन मुताबिक़ और अक़्ले सलीम के नज़दीक हर ऐतबार से क़ाबिल ए तस्लीम है इस्लाम ने तब्क़ाती इम्तियाज़ को बरक़रार रखते हुए ऐसे उसूल तालीम फ़रमाए जिन की बुनियाद पर कोई तब्क़ा हद्दे

एतिदाल से आगे न बढ़ सके और किसी क़िस्म का नाख़ुशगवार तसादुम पैदा न होने पाए जो अमने आम्मा में ख़लल अंदाज़ हो। इरशाद फ़रमाया

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعۡضَكُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ فِى الرِّزۡقِ (نحل: ۷۱)

अल्लाह तआला ने तुम्हारे बाज़ को बाज़ पर रिज़्क़ में फ़ौकियत दी।

यह एक तब्क़ाती इम्तियाज़ है इसके लिए एक क़ानून मुकर्रर फ़रमाया के

وَلَا تَأۡكُلُوۡۤا اَمۡوَالَكُمۡ بَيۡنَكُمۡ بِالۡبَاطِلِ (بقرة: ۱۸۸)

तुम अपने माल को आपस में बातिल के साथ न खाओ

इस्लाम में शख़्सी मिल्कियत:

मुक़द्दस इस्लाम ने इंसानी अज़मत व अहलियत के मातहत शख़्सी मिल्कियत को बरक़रार रखा क्योंकि उसके बग़ैर कोई शख़्स दौलत के लिए अपने क़ुवा ए फ़िक्रिया और अमलिया से आज़ादी के साथ पूरी तरह काम नहीं ले सकता।

ऐसी सूरत में इंसान की इल्मी क़ुव्वतें ज़ाया हो जाती हैं और अशरफुल मख़लूक़ात का इल्म व अमल की कुव्वतों से बिल्कुल ख़ाली हो जाना हिकमते तख़लीक़ के मनाफ़ी था। इसलिए इस्लाम ने शख़्सी मिल्कियत के क़वानीन मुकर्रर फ़रमा दिए और सनअत व हिरफ़त, तिजारत व ज़राअत वगैरह के लिए ऐसे मुकम्मल क़वानीन तालीम फ़रमाए जिस तरह हुसूल ए दौलत के लिए

तालीम फ़रमाए थे। अहले दौलत को माल ख़र्च करने में इन क़वानीन का पूरी तरह पाबंद कर दिया क्योंकि मालदारों की मुतलक़ उल इनानी इक़तिसादी और मुआशरती निज़ाम की तबाही का मूजिब होती है।

रिज़्क की कमी बेशी की बिना पर तब्क़ाती इम्तियाज़ और ज़ाती मिल्कियत जिन आयात से साबित होती है वह हस्बे ज़ेल हैं।

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ . (نحل : ۷۱)

और अल्लाह ने बढ़ाई दी तुम में एक को एक पर रोज़ी में।

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ. (النساء : ۳۲)

और हवस मत करो जिस में बढ़ाई दी अल्लाह ने एक को एक पर।

انظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَلَلْآخِرَةُ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا

(بنی اسرائیل : ۲۱)

देखो तो सही हमने दुनिया में बाज़ को बाज़ पर कैसी बरतरी दी और अलबत्ता आख़िरत के दरजात कहीं बढ़ कर हैं और इस तरह उनकी बरतरी भी कहीं बढ़ कर है।

الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر. (رعد : ٢٦)

अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहता है फ़राख़ कर देता है और जिसकी चाहता है तंग कर देता है।

يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر إنه بكل شيء عليم (شورى : ١٢)

(अल्लाह तआला) जिसकी रोज़ी चाहता है फ़राख़ कर देता है और जिसकी चाहता है नपी तुली कर देता है। वो हर चीज़ को ख़ूब जानता है।

قل إن ربي يبسط الرزق لمن يشاء من عباده ويقدر له. (سبأ: ٣٩)

(ऐ हबीब ﷺ) फ़रमा दीजिए मेरा परवरदिगार अपने बंदों में जिसको रोज़ी देना चाहता है फ़राख़ कर देता है और जिसको चाहता है नपी तुली कर देता है।

रोज़ी की कमी बेशी के लिहाज़ से तब्क़ाती इम्तियाज़ और इनफ़िरादी मिल्कियत बिल्कुल वाज़ेह है क्योंकि क़ौमी मिल्कियत और इश्तिराक की सूरत में कमी बेशी मुतासव्विर नहीं इनके अलावा आयाते मीरास भी तब्क़ाती तफ़ावुत और शख़्सी मिल्कियत पर रौशन दलीलें हैं क्योंकि इश्तिराकियत और क़ौमी मिल्कियत में मीरास का तसव्वुर भी पैदा नहीं हो सकता।

अब वह आयात मुलाहिज़ा फ़रमाएं जिनसे इनफिरादी मिल्कियत साबित होने के अलावा उन उसूल व क़वानीन पर भी पूरी रौशनी पड़ती है जिनकी पाबंदी से वो तमाम ख़राबियां कुल्लीयतन दूर हो सकती हैं जिन का शख़्सी मिल्कियत और तब्क़ाती इम्तियाज़ की वजह से पैदा होना मुमकिन है।

इरशाद होता है:

وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ (بقرة: ٨٣)

और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करते रहना और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों के साथ।

अगर साहिबे दौलत अपने वालिदैन, रिश्तेदारों, यतीमों मिस्कीनों के हक़ में इस क़ानून ए इलाही पर अमल करे और उनके साथ एहसान व सिला-रहमी करता रहे तो तब्क़ाती कश्मकश और मुआशी निज़ाम में किसी क़िस्म की ख़राबी पैदा न होने पाए।

يايها الذين امنوا انفقوا مما رزقنكم من قبل أن يأتي يوم لا بيع فيه ولا خلة ولا شفاعة والكفرون هم الظلمون. (بقرة : ٢٥٤)

ऐ ईमान वालों! हमारे दिए हुए रिज़्क़ में(नेक राह में) ख़र्च करो मगर उस दिन से पहले जिस में न ख़रीदो फ़रोख़्त होगी न दोस्ती न सिफ़ारिश और जो लोग राहे ख़ुदा में ख़र्च न करें नाशुक्री करते हैं वही ज़ालिम हैं।

لن تنالوا البر حتى تنفقوا مما تحبون وما تنفقوا من شيء فإن الله به عليم

(آل عمران : ۹۲)

लोगो! जब राहे ख़ुदा में उन चीज़ों में ख़र्च न करोगे जो तुम्हें प्यारी हैं नेकी के दर्जे को हरगिज़ न पहुंच सकोगे और जो कुछ तुम ख़र्च करते हो अल्लाह उसे ख़ूब जानता है।

والذين في أموالهم حق معلوم للسائل والمحروم (معارج : ۲۴)

और जो लोग (फ़लाह के मुस्तहिक़ हैं) जिनके मांगने वालों और न मांगने वालों दोनों का हिस्सा मुक़र्रर है।

इस्लाम ने दौलत को एक जगह महदूद होने से बचाया है। इसलिए मीरास का क़ानून जारी किया। नेज़ इरशाद फ़रमाया:

مَّا أَفَاءَ اللهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ
وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ كَيْ لَا يَكُونَ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنكُمْ (الحشر : ۷)

जो कुछ अल्लाह तआला अपने रसूल को बस्तियों वालों से बतौर फ़ै अता फ़रमा दे तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल के लिए और रसूल के रिश्तेदारों के लिए, यतीमों, मोहताजों और मुसाफिरों के लिए ताकि वो सिर्फ दौलतमंदों के दरमियान गर्दिश न करें।

नेज़ इरशाद फ़रमाया:

والذين يكنزون الذهب والفضة ولا ينفقونها في سبيل الله فبشرهم بعذاب اليم

(التوبه : ٣٤

और वह लोग जो जमा करते हैं सोना चांदी और उसको अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें सख़्त अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो।

दौलत से बेशुमार क़िस्म की बुराइयां और मुसीबतें पैदा हो सकती हैं अल्लाह तआला ने दौलत को सर्फ़ करने के लिए पाकीज़ा उसूल तालीम फ़रमाए। भलाई और नेकी के कामों में सिर्फ़ दौलत को मुनहसिर फ़रमा कर फ़िज़ूल ख़र्ची और बेराहरवी से रोका। इरशाद फ़रमाया:

وات ذا القربى حقه والمسكين وابن السبيل ولا تبذر تبذيرا إن المبذرين كانوا إخوان الشيطين. (بنى اسرائيل :٢٦/٢٧)

और रिश्तेदार, ग़रीब और मुसाफिर (हर एक) को उसका हक़ पहुंचाते रहो फ़िज़ूल ख़र्ची न करो और फ़िज़ूल ख़र्ची करने वाले शैयातीन के भाई हैं।

दूसरी जगह वज़ाहत से फ़रमाया

إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذي القربى وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي. (نحل : ٩٠)

बेशक अल्लाह तआला तुम्हें हुक्म देता है इंसाफ़ और एहसान का और ज़रूरतमंद क़राबतदारों की इमदाद व इयानत का और तुम्हें बेहयाई और बुरे कामों और सरकशी से रोकता है।

इस्लाम ने दौलतमंदों के लिए ज़कात का क़ानून इसी हिकमत के लिए मुकर्रर फ़रमाया है के ग़ुरबा व मसाकीन जो अपनी ज़रूरियात को पूरा करके ज़राए व वसायल से महरूम हैं मुब्तिला ए तकलीफ न रहें।

अल्लाह तआला ने क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया:

إنما الصدقات للفقراء والمساكين والعاملين عليها والمؤلفة قلوبهم وفي الرقاب والغارمين وفي سبيل الله وابن السبيل فريضة من الله والله عليم حكيم. (التوبة: ٦٠)

ख़ैरात का माल तो बस फ़क़ीरों का हक़ है और मोहताजों का उन कारकुनों का जो माल खैरात के वुसूल करने पर मुताय्यन हैं और उन लोगों का जिन के दिलों को इस्लाम की तरफ़ राग़िब करना मंज़ूर है और ख़ुदा की राह यानी मुजाहिदीन के साज़ व सामान में और मुसाफिरों के ज़ादे राह में यह हुक़ूक़ अल्लाह के मुकर्रर किए हुए हैं और अल्लाह बहुत इल्मो हिकमत वाला है।

क़ुरआने करीम की इन तसरीहात से अच्छी तरह वाज़ेह हो गया के इस्लाम ऐसी सरमाया परस्ती से भी दूर है जिसमें दौलत एक जगह महदूद होकर रह जाए और दौलतमंदों के सिवा कोई इस से मुस्तफ़ीद न हो सके और इश्तिराकियत से भी इस्लाम का कोई ताल्लुक नहीं जो इंसान की कमाई हुई दौलत से उसका जायज़ हक़ भी सलब करती है बल्कि इस्लाम उस एतिदाल का हामी है जो सरमाया परस्ती और इश्तराकियत के बैन बैन है। मुक़द्दस इस्लाम हर मुआमले में इफ़रात व तफ़रीत से बचा कर मियाना रवी की तालीम देता है मौजूदा दौर में सरमाया-परस्ती और इश्तिराकियत का तसादुम दुनिया को हलाकत की तरफ़ तेज़ी से लिए जा रहा है। हलाकत से बचने और निजात व फ़लाहे दारैन हासिल करने का वाहिद ज़रिया मुक़द्दस इस्लाम और उसका मुआशी निज़ाम है।

सोशल मीडिया और बहकते नौजवान

: गुलाम मुस्तफा नईमी

सोशल मीडिया पर जब से शॉर्ट वीडियो ऐप का चलन शुरू हुआ है, तो हमारे आसपास एक्टरों , मस्खरों, डांसरों और नक्कालों की एक बड़ी फौज तैयार गई है, अब इस फौज में बिला ख़ेज़ लड़कों के साथ लड़कियां भी शामिल हो गई हैं।

पहले पहले इन वीडियो ऐप को लोग महज़ सस्ती तफ़रीह के तौर पर इस्तेमाल करते थे। इसलिए, इसका चलन ज़्यादा नहीं था। मगर वीडियो के ज़रिए पैसा कमाने का आप्शन मालूम हुआ तो देखते ही देखते इन ऐपों पर शहर तो शहर दूर उफ़्तादा गांव देहात के लड़के लड़कियों ने भी वो तूफ़ान उठाया के अल्लाह की पनाह।

खेतों, कारखानों में काम करने वाले, ईंट भट्ठों पर मिट्टी गारा बनाने वाले, रिक्शा पटरी चलाने वाले, और पसमांदा घरानों के लड़के भी ख़रमस्तियां करने में शहरी छोकरों से किसी तौर पर कम नहीं हैं।

कहावत है जब तूफान आता है तो पहले हल्की-हल्की लहरें आती हैं, आहिस्ता आहिस्ता कूड़ा करकट बहता हुआ आता है। उसके बाद जब सैलाब अता है तो

सब कुछ बह ले जाता है। ऐसा ही मुआमला इन ऐप के आने के बाद हुआ। शुरुआती दौर में चंद निठल्ले लड़के ही मस्खरी और नौटंकी करते फिरते थे मगर जैसे जैसे लहरें तेज़ हुईं सैलाब की शिद्दत बढ़ती गई। नौबत यहां तक पहुंची के गांव देहात और शरीफ़ घरानों की लड़कियां भी चोरी छुपे वीडियो बना बना कर अपलोड करने लगीं।

सोशल मीडिया एक नशा है जिसे लग जाए वो हर वक़्त उसके ख़ुमार में रहता है। अगर इस नशे में पैसा कमाने का जुनून भी मिल जाए तो नशा दो आतिशा हो जाता है। ऐसा ही यूट्यूबर और शार्ट वीडियो बनाने वालों के साथ हो रहा है। अब उन्हें महज़ वीडियो बनाने पर तसल्ली नहीं होती जब तक उस पर बड़ी तादाद में Like और Subscribers न मिलें। क्योंकि उन्हीं की बुनियाद पर ऐप कम्पनियां और यूट्यूब पैसा देता है इसलिए देखने वालों को मुतवज्जह करने के लिए हर जतन किया जाता है।

इस ख़ुमार का असर है के शरीफ़ घरानों की लड़कियां तक फ़हश अंदाज़ में डांसिंग वीडियो बना कर अपलोड कर रही हैं और लड़के मुकम्मल तौर फ़िल्मी एक्टरों की तरह गाली गलौज और हर तरह की ख़ुराफ़ात को अपना चुके हैं। क्योंकि इस फ़ील्ड में नौजवानों की बहुत बड़ी तादाद मौजूद है। लगातार वीडियो अपलोड हो रहे हैं तो देखने वालों का टेस्ट भी Better than best की डिमांड करने लगा है। इसलिए नए से नया content और presentation बहुत अहम हो गया है। टीवी और सिनेमा एक इंडस्ट्री के तौर पर क़ायम हैं। जहां एक एक

सीन के लिए दर्जनों माहेरीन की मेहनत व सलाहियत लगती है तब जाकर एक अच्छा सीन होता है। मगर गली मोहल्लों में शार्ट वीडियो बनाने वाले लड़के लड़कियां बमुश्किल दो चार की टोलियों में ही होते हैं। और कुछ ख़ास पढ़े लिखे भी नहीं होते। इसलिए लड़के आहिस्ता आहिस्ता फूहड़ बातों और गाली गलौज करने पर उतर आए हैं जबकि लड़कियां फ़हश बातों और शहवत अंगेज़ डांस पर उतर आई हैं। अगर वक़्त रहते इस तूफान की रोक थाम न की गई तो ख़ुदा जाने अंजाम क्या होगा?

कैसे हो रोकथाम?

इरादें मज़बूत हों तो हर बुराई की रोकथाम मुमकिन है। मगर परेशानी जितनी बड़ी होती है मेहनत भी उतनी ही करनी पड़ती है। चुंकि सोशल मीडिया की पहुंच इतनी बढ़ गई है के इस पर पाबंदी लगाना तो किसी के लिए मुमकिन नहीं रह गया है लेकिन अगर मज़बूत क़ुव्वते इरादी से काम किया जाए तो हम काफ़ी हद इन मसाइल की रोकथाम कर सकते हैं। इस मुहिम में वालिदैन, असातिज़ा, अइम्मा और समाजी तौर पर ज़िम्मेदार हर शख़्स को अपना किरदार अदा करना होगा।

चन्द अहम निकात हाज़िर हैं:

1.बच्चों को चुप कराने या हंसने हंसाने के लिए फिल्मी गानों वगैरह का इस्तेमाल बिल्कुल न किया जाए। बिगाड़ की शुरुआत हमेशा ऐसे ही होती है।

2.जिस उम्र में बच्चे अल्फ़ाज़ समझने लगें उस वक़्त भूल कर भी बच्चों के सामने गाली गलौज न की जाए।

3.ज़माना शनास और संजीदा अफ़राद की ऐसी टीम तैयार की जाए जो इन ऐप को तामीरी कामों में इस्तेमाल करने की तराकीब निकाल सकें नेमल-बदल तैयार कर सकें।

4.मदारिस व स्कूल में किताबी फनों के साथ साथ मुआशरती अख़लाक़ व आदाब लाज़िमी सिखाए जाएं।

5.असातिज़ा ख़ुद अपने तल्बा के लिए रोल मॉडल बनें और वक़्तन फ़वक़्तन ऐसे मौज़ूआत पर माहेरीन के ख़ुसूसी ख़िताब कराए जाएं।

6.अइम्मा ए मसाजिद ऐसे मौज़ूआत पर अच्छे उस्लूब और मोहज़्ज़ब अंदाज़ में रौशनी डालें ताकि नौजवान नस्ल इन क़बाहतों से वाक़िफ़ और मुतनफ़्फर हों।

7. ऐसे मौज़ूआत पर बाज़ारी लबो-लहजे और ग़ैर-संजीदा अंदाज़ से परहेज़ करें ताकि फ़ायदे की जगह नुकसान न हो जाए।

8. समाजी तौर पर मुनअक़िदा मजलिसों में गाहे गाहे इन उमूर पर बातचीत होती रहे।

9. वालिदैन अपने नौजवान बच्चे बच्चियों पर ख़ुसूसी ध्यान रखें। उन्हें बहकता देखें तो कमाले हिक्मत के साथ उनकी इस्लाह की कोशिश करें।

10. आइम्मा ए किराम और समाजी ज़िम्मेदारान भी ऐसे मवाक़ेअ पर अपना मुसलिहाना किरदार अदा करें ताकि बुराई को पनपने का ज़्यादा मौक़ा न मिल सके।

इसके अलावा जो भी मुफ़ीद और ज़रूरी इक़दामात हो किए जाएं ताकि मुआशरे में बढ़ती हुई बेराहरवी को रोका जा सके और अपनी जवानियों को बेमक़सद और ग़लत कामों में ज़ाया करने वाले लड़के लड़कियों को बेहयाई के दलदल से बचाया जा सके।

माज़ी और हाल के क़ायेदीन

: फरदीन अहमद खान रज़वी

بسم الله الرحمن الرحيم

थे तो आबा वो तुम्हारे ही मगर तुम क्या हो,

हाथ पर हाथ धरे मुन्तज़िर ए फिरदा हो।

सल्तनत ए मुग़लिया के सब से अज़ीम क़ाइद, असकरी जरनैल,और दुरवेश सिफत बादशाह, सुल्तान मुहीयुद्दीन मुहम्मद औरंगज़ेब आलमगीर गाज़ी जब दारे फानी से कूच कर गए, अपने पीछे मुत्तहिदा बर्रे सगीर की एक वसीअ़ और अरीज़ सल्तनत छोड़ गए। जिस में हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, कश्मीर और बांग्लादेश शामिल थे। अपनी खुदा दाद असकरी सलाहियतों की बिना पर ही सुल्तान आलमगीर मुमकिन मुत्तहिदा हिन्दुस्तान वुजूद में ला सके और इसे हर दाखिली और खारजी हमले से महफूज़ रख सके। यहां तक कि उन के तीनों भाइयों ने उनके खिलाफ जब ऐलान ए बगावत किया तो उन्होंने सभी की सर कोबी की और रियासतों को टूटने और बागी होने से हमेशा परे रखा।।

मगर सितम ज़रीफी देखें कि जब उनका इन्तेक़ाल सन 1707 ई में हुआ, उसके बाद पै दर पै ऐसे काएदीन के हाथ में सल्तनत की बाग ढोर आई कि जिन्हें अपनी सुध-बुध थी न कोई सियासी शऊर, नतीज़ा ये हुआ कि एक दो को छोड़ कर किसी की भी बादशाहत ज़्यादा वक्त तक न टिक सकी और इसी तरह सल्तनत का शीराज़ा बिखरता रहा।

आप यकीन जानिये कि बादशाह आलमगीर के इंतेकाल यानी सन 1707 ई से 1837 ई तक पूरे 130 सालों में 18 सुल्तान तख्त नशीन हुए मगर किसी के भी असकरी, तामीरी या दीनी कारनामे तारीख में रक़म नहीं हैं।

इस के बाद एक वक्त वो भी आया कि सल्तनत ए मुगलिया को एक काबिल और लायक सुल्तान मिला भी लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी, जब सुल्तान मुहम्मद बहादुर शाह ज़फ़र गाज़ी तख्त नशीन हुए, उनके अबाओ अजदाद, इस क़दर ऐश ओ इशरत में सारा सरमाया उड़ा चुके थे कि तमाम रियासतें टूट चुकी थीं। तारीख दां इस आखिरी बादशाह के बारे में यही कहते हैं कि वो अपने आबाओं अजदाद की गलतियों का इज़ाला न कर सके और बिल-आखिर सल्तनत ज़वाल पज़ीर हो गई।

अब अगर ज़रा गौर करें तो माज़ी की ये दास्तान हम से चीख़ चीख़ कर कुछ कह रही है, ज़रा कान लगा कर सुने तो सही! और वो पैगाम ब-जुज इसके सिवा क्या है कि जब ज़ुमामे-कार, न अहल लोगों के हाथों में आ जाती है तो सल्तनतें ज़वाल पज़ीर होती हैं । इतनी बात अगर ज़हन में जमा ली हो तो ये भी सुने कि मौजूदा

हालात में इस कदर तेज़ी से और खासतौर पर पिछले पांच सालों में इतने उलामा, मशाइख़ और मज़हबी कायेदीन, दारे-फानी से दारे बक़ा की तरफ रिहलत फरमा गए कि बस अल-अमान-वल-हफीज़!

हमारे दारुल इफ्ता, मिम्बरो मेहराब मातम कुना हैं, कि उन अजिल्ला अमाएदीन की कलम की जुम्बिश, आवाज़ की सहर आफरीनी और जिगर का सोज़ मेहसूस कर सके। आह! वो दुरवेश हमारे बीच अब न रहे! आह! वो मुकद्दस और पाकीज़ा हस्तियां किसी पर्दे में जा छुपीं! कलम और सोज़े बयां जिनका था मुखलिस हर दम। वो मिल्लत के सितारे तो गुरूब हो गए, पर्दा फरमा गए, हमारी आँखों से ओझल हो गए हाँ उन सब का रुहानी फैज़ बाक़ी है, उनका फैज़ान जारी है मगर अब जब उम्मत पर मुश्किल वक्त पड़ेगा, बातिल की आँखों में आंखें कौन डालेगा? हमारी मज़हबी रहनुमाई कौन करेगा? और उनके जाने से पैदा हुए खला को पुर कौन करेगा?

इसी इसना में वो सवाल पैदा होता है जो हमें बा-हैसियत ए मिल्लत बहुत पहले अपने आप से पूछना चाहिए था क्या हम वाक़ई कायेदीन पैदा कर रहे हैं? आपसी इख्तेलाफात में इस कदर घुल चुके हैं, अपनी नफसानियत के इस कदर ज़ेर असर आ चुके हैं कि हमें कुछ देखने की ज़रूरत ही नहीं है।

मेरे दोस्तों वक्त है कि हमारी मिल्लत को नए काइद पैदा करने ही होंगे, आज के हालात का अगर तज्ज़िया करें तो जहां भी उलामा ए दीन दुनिया से रुखसत हो रहे हैं उनके जानशीन शायद बहुत नेक लोग हैं, अच्छी नियतें रखते हैं और

मिल्लत की खिदमत भी करना चाहते हैं पर सवाल ये है कि क्या वो अपने आबाओ अजदाद जैसी 20% भी सलाहियत के हामिल हैं? मैं कोई फैसला नहीं दे रहा और न ही अपना जजमेंट दे रहा हूं, सिर्फ सवाल कर रहा हूं जो मेरे बड़ों को खुद से पूछना है और मिल्लत को जवाब देना है!

इस बात को परखने की कसौटी हमारे माज़ी में छुपी है, जरा ऊपर ज़िक्र करदा उस लाइन पर नजर डालें: "पूरे 130 सालों में 18 सुल्तान तख्त नशीन हुए मगर किसी के भी असकरी,तामीरी या दीनी कारनामे तारीख में रक़म नहीं हैं" शायद आपको अंदाज़ा हुआ हो कि मैं किस कसौटी की बात कर रहा हूं?

जी हाँ! कारनामे, यानी कि अहल और न अहल के बीच का फर्क़ ही ये है कि तख्त पर सिर्फ तख्ता नशीन बनने के लिए नहीं बैठा जाता बल्कि उसके लिए सलातीन जैसे मार्के भी सर करने पड़ते हैं, असकरी जरनैल बनने के लिए मैदान ए जंग में उतरना पड़ता है और जान की बाज़ी लगानी पड़ती है। ठीक वैसे ही मेरे प्यारे! किसी दुरवेश की मसनद मिरास में नहीं मिलती। इस के लिए फ़ना की मंजिलें तय करनी होती हैं। मारिफत के जाम पीने होते हैं, मुराक्बे में ज़िन्दगी गुजरनी होती है। इसी तरह अमाए दीन का मिंबर भी मुफ्त में नहीं मिलता। इमाम ए वक्त होने के लिए वैसी खिदमात अंजाम देना होती हैं, रास्तो में उतर कर, कौम के बीच रहकर उनके हालात का जायज़ा लिया जाता है फिक्र और नज़र में वो बालीदगी पैदा की जाती है। एयर कंडीशन रूम में मजलिसें करके और फाइव स्टार होटल से भी ज़्यादा उम्दा हुजरे में बैठ कर पैगामात इरसाल करने से

मिल्लत का दर्द कैसे दूर हो सकता है? शायर ए मशरिक़ ने शायद यही कुछ सोचा होगा जब उन्होंने ये बात कही

"बाप का इल्म न बेटे को अगर अज़बर हो,

फिर पिसर काबिल ए मीरास ए पिदर क्यूं कर हो!"

पूरी गुफ़्तगू का इत्र ये है कि हमारे कायेदीन जो तेज़ी से रुखसत हो रहे हैं उनके बाद वालों को अब ये सोचना चाहिए कि अगर वो अपने अजदाद के मिशन को लेकर आगे नहीं बढ़ रहे, अगर खिदमत ए मिल्लत में कोई खातिर ख्वाह इज़ाफा नहीं कर रहे। मसनद पे सिर्फ मसनद-नशीन बनने के लिए बैठे हैं। तो वो खुद भी इस मिल्लत के इल्मी, फिक्री और कौमी ज़वाल के कहीं ना कहीं जिम्मेदार हैं। और इन्हें अगर कोई न-अहल कह भी दे ,तो अब वो जानते हैं कि उसके उन जुमलों के पीछे कौन से ज़ज्बात कारफर्मा हैं। बड़ा बनने के लिए बड़े काम करने पड़ते हैं। विरासत में मिली हुई बड़ाई ज़्यादा दिन की मेहमान नहीं होती। ज़िम्मेदारियों को पूरा करें और फर्ज़ ए मनस्वी का लिहाज़ रखें। तब ही ये कहा जा सकता है कि हम अपने असलाफ़ के सच्चे जानशीन हैं ।

बस इन्हीं कलिमात पर अपनी गुफ़्तगू ख़त्म करुंगा कि

खाके मशरिक पर चमक जाए मिसाल ए अफताब,

ता-बदखशां फिर वही लाल ए गिरां पैदा कर।

अल्लाह तआला हम सबको अपने असलाफ का सच्चा जानशीन बनाए और मज़हबो मिल्लत की खूब खूब खिदमत करने की तौफीक अता फरमाए।

आमीन

इस्लाम में पड़ोसी के हुक़ूक़

: मुहम्मद फ़ैज़ुल आरफ़ीन रज़वी

इस्लाम सब से पसंदीदा मज़हब इसलिए है के इस्लाम की ख़ुसूसियात में से एक ख़ुसूसियत यह है कि इसने हुक़ूक़-उल्लाह के साथ साथ हुक़ूक़-उल-इबाद की तरफ़ भी तवज्जो दिलाई है। इस्लाम में ऐसा कोई हक़ नहीं के जिस के बारे में हमें सिखाया न गया हो, चाहे वो हुक़ूक़-उल्लाह हो या हुक़ूक़-उल-इबाद। क्योंकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त क़यामत के दिन अपना हक़ माफ़ फ़रमा देगा, लेकिन बन्दे इस दिन एक दूसरे को माफ़ नहीं करेंगे। क्योंकि नफ़्सा नफ़्सी का आलम होगा, इस्लाम में हुक़ूक़-उल-इबाद को बड़ी अहमियत दी गई है। इस्लाम ने जहां रिश्तेदारों और वालिदैन के हुक़ूक़ के बारे में सिखाया। वहीं पड़ोसी के हुक़ूक़ के बारे में भी सिखाया, पड़ोसियों के साथ हुस्ने सुलूक, उनके अच्छे बुरे में शरीक रहने, उनके साथ अच्छे अख़लाक़ से पेश आने की क़ुरआने पाक में बहुत सी जगह ताकीद फ़रमाई गई है। उनसे किसी भी तरह का बुग़्ज़ व हसद, उनको तकलीफ पहुंचाने को ईमान व इस्लाम की तालीमात के ख़िलाफ़ क़रार दिया गया है।

एक अहम बात:

पड़ोसी सिर्फ वो नहीं जिसका घर हमारे घर से मुत्तसिल हो बल्कि हर वह पड़ोसी है के जिसका घर हमारे घर से क़रीब हो, जिसका घर हमारी गली में हो और वह शख़्स भी पड़ोसी ही है जो चंद घंटों के लिए किसी सफ़र वगैरह में हमारे साथ रहा हो, उसके साथ अच्छे अख़लाक़ से पेश आना हमारा दीनी फ़रीज़ा है जैसा के क़ुरआने पाक में इरशाद हुआ:

وَاعْبُدُوا اللهَ وَلاَ تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالجَنبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللهَ لاَ يُحِبُّ مَن كَانَ مُخْتَالاً فَخُورًا

तर्जुमा: ऐ लोगों अल्लाह ही की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ और मां-बाप, रिश्तेदार,यतीम, मिस्कीन, क़रीबी पड़ोसी, अजनबी पड़ोसी, और पास के रफ़ीक़, मुसाफिर और गुलामों के साथ हुस्ने सुलूक करो।

और इसी तरह एक हदीसे पाक जो के हज़रत आयशा رضی اللہ عنہ से मरवी है के हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया के

जिबराईल अलैहिस्सलाम हमें पड़ोसी के बारे में बराबर वसीयत करते रहे यहां तक मुझे यह ख़द्शा होने लगा के अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त वारिस बना देगा।

(بخاری شریف-حدیث نمبر-۹۵۳)

पड़ोसी तीन तरह के हो सकते हैं

1) वह पड़ोसी जो रिश्तेदार हो मुसलमान हो

इसके तीन हक़ हैं, अव्वल इस्लाम का, दूसरा रिश्तेदारी का, और तीसरा पड़ोसी होने का।

2) वह पड़ोसी जो मुसलमान हो अजनबी हो:

इसके दो हक़ हैं, अव्वल इस्लाम का दूसरा पड़ोसी होने का।

3) वह पड़ोसी जो अजनबी हो और ग़ैर मुस्लिम हो:

उसका एक ही हक़ है और वो है पड़ोसी होने का।

तो इससे मालूम हुआ कि पड़ोसी होने में यह नहीं देखा जाएगा के वह हमारा रिश्तेदार भी है या नहीं? मुसलमान भी है या नहीं? बल्कि पड़ोसी होने के ऐतबार से उनके साथ यक्सां तौर पर हुस्ने अख़लाक़ की तालीम दी गई है। इस सिलसिले में हुज़ूर ﷺ ने बहुत सी हिदायत फ़रमाई हैं। एक हदीस पाक मुलाहिज़ा हो:

وعن أَبِي شُرَيْحٍ الخُزاعِيِّ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ كَانَ يُؤمِنُ بِاللّٰهِ والْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيُحسِنْ إلى جارِهِ، ومَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ واليومِ الآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ، ومَنْ كانَ يُؤمنُ باللّٰهِ واليومِ الآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا أَوْ لِيَسْكُتْ (مسلم)

तर्जुमा:- हज़रत अबु शुरेह ख़ुज़ाई (رضی اللّٰہ تعالیٰ عنہ) से मरवी है: के बेशक नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है, उसे चाहिए के वह अपने पड़ोसी के साथ हुस्ने सुलूक करे। और जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है उसे चाहिए के वह मेहमान की तकरीम करे और जो

अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि कलमा ए ख़ैर कहे या फिर ख़ामोश रहे।

एक और रिवायत में है के अल्लाह के रसूल ﷺ ने इरशाद फ़रमाया के

अल्लाह की क़सम! वह शख़्स मोमिन नहीं, अल्लाह की क़सम! वह शख़्स मोमिन नहीं, अल्लाह की क़सम! वह शख़्स मोमिन नहीं सहाबा ए किराम رضوان الله عليهم أجمعين **ने पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! कौन ?, तो अल्लाह के रसूल ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: वह शख़्स जिसकी अज़ीयतों से उसका पड़ोसी मामून न रहता हो।**

पड़ोसी और हमसाये के हुक़ूक़ की तफ़सील:

पड़ोसी और हमसाये का हक़ यह भी है के उसकी ख़बर गीरी की जाए, उसके खाने पीने का ख़्याल रखा जाए, जब अच्छा खाना बनाए तो उसके घर भेजा जाए। रिवायतों में आया है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया

वह शख़्स मोमिन नहीं जो शिकम सैर होकर खाता हो और उसका पड़ोसी भूखा रात गुज़ारता हो

(بیہقی؛حدیث نمبر-١٩٦٠)

पड़ोसी का एक हक़ यह भी है के दुख और परेशानी में इसका साथ दिया जाए, बीमार हो तो उसकी अयादत की जाए। पड़ोसी का कोई क़रीबी या रिश्तेदार फ़ौत हो जाए तो उसकी ताज़ियत की जाए, अगर वह क़र्ज़ा मांगे तो क़र्ज़ा दिया

जाए। कर्ज़ की अदायगी के लिए मोहलत मांगे तो मोहलत दी जाए। अगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने वुसअत दी है तो क़र्ज़ की रक़म माफ़ करदी जाए।

पड़ोसी के जो हुक़ूक़ बताए गए हैं अगर मुस्लिम उन पर अमल करने लगे तो एक मिसाली मुआशरा वुजूद में आएगा। और बिरादराने वतन को भी इस्लाम और मुसलमानों के ताल्लुक़ से एक मुस्बत और अच्छा पैग़ाम जाएगा।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से दुआ है के हमें एक दूसरे के हुक़ूक़ को सही तौर पर अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین یا ربّ العٰلمین بجاہ سید المرسلین صلی اللّٰہ علیہ وسلم۔

निकाह! वक़्त की अहम ज़रुरत

: नाज़िश मदनी मुरादाबादी

निकाह जहां नबी ए पाक ﷺ की अज़ीम सुन्नते मुबारक है वहीं इंसानी फितरत का अहम हिस्सा भी है बल्कि इस पुर फ़ितन दौर में तकरीबन हर बालिग़ मर्द व औरत के लिए निकाह वुजूब का दर्जा रखता है। मगर अफ़सोस के साथ यह कहना पड़ रहा है के शरियते इस्लामिया ने जिस क़दर निकाह को आसान किया था उस क़दर आज कल लोगों के बेजा रस्मों रिवाज ने इस नेक काम को मुश्किल तरीन बना दिया है। फ़ी ज़माना हाल यह है कि जिस उम्र में बच्चों की शादी होनी चाहिए वह सारा वक़्त वालिदैन उसकी तालीम व ताअ़ल्लुम में ख़त्म कर देते हैं और इसको इसी ख़्याल में गुज़ार देते हैं के अभी तो यह अपने पैरों पर भी नहीं खड़ा हुआ बीवी को कैसे रखेगा जबकि यह ख़िलाफ़े शरअ़ सोच है के जब वह कमाना शुरू करेगा तब शादी होगी। ठीक है बन्दे के पास कोई ज़रिया ए मआ़श भी हो मगर इसका हरगिज़ यह मतलब नहीं के इस बहाने से उसको इस नेमत ए उज़मा से महरूम रखा जाए। याद रहे रोज़ी रोटी राज़िक़े कायेनात के दस्ते कुदरत में है। बीवी के आने से पहले ही रिज़्क़ का इंतेज़ाम अल्लाह करीम ख़ुद फ़रमा देता है।

ऐ काश मेरी क़ौम के वो वालिदैन कुछ देर बैठ कर सोचें के हम ताख़ीर दर ताख़ीर कर के बच्चों की ज़िन्दगी को क्यों दाओं पर लगा रहे हैं इससे पहले के आपकी औलाद ग़ैर मुनासिब राहें इख़्तियार कर के आप की इज़्ज़त को पामाल करे पहले ही उसकी निकाह की राहें हमवार की जाएं बाद में कफ़े अफ़सोस मलने से कुछ नहीं होगा

अब पछताए क्या होत

जब चिड़िया चुग गईं खेत

क्या आप को मालूम नहीं के किस क़दर पुर फ़ितन दौर है जिसमें हम जी रहे हैं हर तरफ़ फ़ितना ही फ़ितना है जो कुछ कम था तो वो कमी इस मोबाइल ने पूरी कर दी और इसका इस्तेमाल भी मख़्फ़ी नहीं है तो बताओ इसके जिन्सी ताल्लुक़ात और ख़्वाहिशात मांद रहेंगे या बढ़ेंगे और वो जिंसी मरीज़ बनेगा या नहीं? यक़ीनन सब का जवाब इस्बात ही में होगा जब सारा कुछ आपको मालूम है तो फिर ताख़ीर क्यों? और ज़ुल्म बालाए ज़ुल्म यह के अगर बच्चा अपनी ख़्वाहिशात से मजबूर होकर अगर वालिदैन की याद दिहानी कराता है तो उसको यह कहकर ज़लील किया जाता है के बेशर्म इंसान वालिदैन से यह बातें कही जाती हैं मैं कहता हूं साहिब! यह बेहयाई नहीं है बल्कि उसका अपना हक़ तलब करना है जिसको आपने बेशर्मी का नाम दिया हुआ है।

इस मुआमले में जब हम दौरे सहाबा की तरफ़ नज़र करते हैं तो मालूम होता है सहाबा ए किराम आपस में इस मुआमले को लेकर किस क़दर हस्सास हुआ

करते थे इस बात का अंदाज़ा अबु दाऊद शरीफ़ की इस हदीसे मुबारक से ही लगाया जा सकता है।

عَنْ عَلْقَمَةَ، قَالَ إِنِّي لَأَمْشِي مَعَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ بِمِنًى، إِذْ لَقِيَهُ عُثْمَانُ فَاسْتَخْلَاهُ، فَلَمَّا رَأَى عَبْدُ اللَّهِ أَنْ لَيْسَتْ لَهُ حَاجَةٌ، قَالَ لِي تَعَالَ يَا عَلْقَمَةُ، فَجِئْتُ، فَقَالَ لَهُ عُثْمَانُ أَلَا نُزَوِّجُكَ يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ بِجَارِيَةٍ بِكْرٍ، لَعَلَّهُ يَرْجِعُ إِلَيْكَ مِنْ نَفْسِكَ مَا كُنْتَ تَعْهَدُ؟ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ لَئِنْ قُلْتَ ذَاكَ، لَقَدْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمُ الْبَاءَةَ فَلْيَتَزَوَّجْ، فَإِنَّهُ أَغَضُّ لِلْبَصَرِ وَأَحْصَنُ لِلْفَرْجِ، وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ فَعَلَيْهِ بِالصَّوْمِ فَإِنَّهُ لَهُ وِجَاءٌ.

(کتاب السنن سنن ابی داؤد 3/5 حدیث 2039 موسسة الریان بیروت لبنان)

अल्क़मा कहते हैं कि मैं अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضی اللہ عنہ) के साथ मिना में चल रहा था के अचानक उनकी मुलाकात उस्मान (رضی اللہ عنہ) से हो गई तो वह उनको लेकर ख़लवत में गए, जब अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضی اللہ عنہ) ने महसूस किया के उन्हें (शादी की) ज़रूरत नहीं है तो मुझसे कहा अल्क़मा! आजाओ तो मैं गया तो उस्मान (رضی اللہ عنہ) ने उनसे कहा अबु अब्दुर्रहमान! क्या हम आपकी शादी एक कुंवारी लड़की से न करा दें, शायद आपकी देरीना ताक़त व निशात वापस आ जाए। अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضی اللہ عنہ) ने कहा अगर आप ऐसी बात कह रहे हैं तो मैं तो अल्लाह के रसूल ﷺ को फ़रमाते हुए सुन चुका हूं कि तुम में से जो शख़्स निकाह की ताक़त रखता हो उसे निकाह कर लेना चाहिए क्योंकि यह निगाह को ख़ूब पस्त रखने वाली और शर्मगाह की ख़ूब हिफाज़त करने वाली चीज़ है और जो तुम में उसके इख़राजात की ताक़त न रखता हो तो उस पर रोज़ा है उसकी शहवत के लिए तोड़ होगा।

देखिए किस अहसन अंदाज़ में सहाबा ए किराम आपस में एक दूसरे के मशवरों से निकाह के मुआमलात को हल कर लिया कर लेते थे हालांकि वह मौजूदा फ़ितनों से पाकीज़ा ज़माना था मगर फिर भी इन नुफ़ूसे क़ुद्दसिया को किस तरह अपने भाइयों के निकाह का एहसास होता था आख़िर में फिर मैं यही कहूंगा के वालिदैन अपने बच्चों के निकाह के तरफ़ ध्यान दें और हर वक़्त उनकी अज़्दवाजी ज़िन्दगी को बेहतर से बेहतर बनाएं।

अल्लाह करीम उम्मते मुस्लिमा के हाले ज़ार पे रहम फ़रमाए

मुस्लिम जानी और माली तहफ्फुज़ के लिए ज़रूरी इक़दामात।

: मुहम्मद आदिल रज़ा मातुरीदी

जिस दौर से हम गुज़र रहे शामते अमाल, जज़्बा कबिलतु से सुनसान,आपसी इन्तेशार और इख्तेलाफ ने हमें जिस मुकाम पर ला कर खड़ा कर दिया है। ये हमारी तारीख का पहला हादसा है। कभी हम आलमी पैमाने पर इतने ज़लील और रुसवा और बे-वुक'अत नहीं हुए जितना कि आज नज़र आ रहे हैं। हमारी हैसियत और बिसात किसी पर छुपी हुई नहीं है।

हमें अपने निज़ामे जिंदगी को सिर्फ इनफिरादी तौर पर इस्तेमाल करने से काम नहीं चलने वाला। इब्तेदा ही से बुनियाद मजबूत करना होगी। अपने हालात को कारज़ार बनाना होगा ।

फरमान ए बारी तआला पर अमल करना तो तब ही मुमकिना सूरत फलाह और बहबूदी की तरफ गामज़न होगी।

कुरआने मजीद में है:

"ان اللہ لا یغیر ما بقوم حتی یغیر ما بانفسھم"

(پارہ۱۳،سورہ:۱۳،آیت:۱۱)

तर्जुमा: बेशक अल्लाह तआला किसी कौम को गर्दिश में नहीं डालता जब तक वो अपनी हालत खुद न बदल डाले।

कौम ए मुस्लिम को न उम्मीद और मायूसी और नकामी का भी शिकार नहीं होना चाहिए। अल्लाह तआला की रहमत से उम्मीद रखना चाहिए। ब्लकि उसके लुत्फ और करम पर एतिमाद और यकीन रखना चाहिए।

कुरआने मजीद में है:

لا تائیسوا من روح اللہ انہ لا یایئس من روح اللہ الا القوم الکافرون

(سورہ:۱۲،آیت:۸۷)

तर्जुमा: अल्लाह की रहमत से न उम्मीद न हो बेशक अल्लाह की रहमत से न उम्मीद नहीं होते मगर काफिर।

दूसरी जगह पर है:

وکان حقا علینا نصر المؤمنین

(سورہ۳۰،آیت:۴۷)

तर्जुमा: और हमारे ज़िम्मे करम पर है मुसलमानों की मदद फरमाना,

وانتم الاعلون ان کنتم مؤمنین

(سورت:۳،آیت:۱۳۹)

तर्जुमा: तुम ही ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो।

अगर कौम ए मुस्लिम हक-पसंदी, साबित-कदमी के साथ ईमान और इस्लाम पर कायम और दायम रहे तो इसको कोई ज़लील और रुसवा और मुखालिफत से कोई नुकसान नहीं पहुंचाए गा। बस शर्त यही है कि अपने दीन पर मजबूती के साथ कायम रहे तो हदीस शरीफ में ग़ालिब रहने का वादा फरमाया है:

हुज़ूरे पाक ﷺ ने फरमाया:

لا تزال من امتی ظاہرین علی الحق لا یضرھم من خذلھم ولا من خالفھم حتی یاتی امر اللہ وھم علی ذلکُ البًا۔

(صحیح مسلم، صفحہ ۷۹۵،بیت الافکار الدولیۃ

तर्जुमा: मेरी उम्मत का एक गिरोह हमेशा हक पर ग़ालिब रहेगा उनकी मुखालिफत और रुसवाई करने वाला उनको ज़रर न पहुंचा सकेगा कि वो गिरोह उसका हुक्म आने तक उस पर ग़ालिब रहेगा।

इमाम ए अहले सुन्नत फाज़िले बरेलवी अलैह रहमा ने मुसलमानों की कामयाबी और कामरानी और उनकी तरक़्क़ी के लिए 4 निकात तहरीर किये, मनदरजा ज़ैल हैं

(1)- बा-इस्तिशना मा'दूद बातों के जिन में हुकूमत की दस्त अंदाज़ी हो अपने तमाम मामलात अपने हाथ में लेते, अपने सब मुकद्दमात अपने आप फैसल करते, ये करोड़ों रुपये जो स्टाम्प और वकालत में घिसे जाते हैं घर के घर तबाह हो गए और हो जाते हैं महफ़ूज़ रहते।

(2)- अपनी कौम के सिवा किसी से कुछ न खरीदते कि घर का नफा घर ही में रहता, अपनी हिरफत और तिजारत को तरक्की देते कि किसी चीज़ में किसी कौम के मोहताज न होते,

(3)- मुंबई,कोलकाता, मद्रास, हैदराबाद, बगैरह के तवंगर मुसलमान अपने भाई मुसलमानों के लिए बैंक खोलते, सूद, शरा ने क़तई हराम फरमाया है, मगर सौ तरीके नफा लेने के हलाल फरमाए हैं। जिन का बयान कुतुब ए फिकह में मुफस्सल है ।

(4) सबसे ज़्यादा अहम, सब की जान, सब की असल अज़ीम दीन ए मतीन था जिसकी रस्सी मजबूत थामने ने अगलो को उन मदारिजे आलिया पर पहुंचाया, चार दागें आलम में उनकी हैबत का सिक्का बिठाया, नाने शबीना के मोहताजों को बुलंद ताजों का मालिक बनाया और इसी को छोड़ने ने पिछलों को यूँ चाहे ज़िल्लत में गिराया।

(माखूज़: तदबीरे फलाहो नजातो इस्लाह,)

ये तो वो निकात थे अगर मुसलमान आज इन पर अमल पैरा हो जाएं तो मुसलमानों की जानी माली हालत संभल जाये। जानी माली तहफ्फुज़ के लिए दूसरे इक़दामात पर भी अमल किया जा सकता है। लेकिन सबसे ज़्यादा अहम ये है कि तालीम पर तव्वजो दिया जाए, मुआशी हालात को ले कर एक दूसरे का मुकम्मल साथ दिया जाए। तमाम उन चीज़ों से बचा जाए कि जिस से दीन और मिल्लत का नुकसान हो और मुसलमानों में इख्तिलाफ और इन्तेशार का सबब बने।

किसी मुफक्किर ने कहा था कि कामयाबी के लिए तीन बातों का लिहाज़ बहुत ज़रूरी है:

(1)- माज़ी से सबक हासिल करना।

(2)- हाल का सही इस्तेमाल करना।

(3)- मुस्तक़बिल के तईं पर उम्मीद रखना।

माज़ी में होने वाली खामियो से सबक हासिल किया जाए मुसतक़बिल में उनको दोहराया न जाए

हालात ए हाज़िरा पर गहरी नज़र रखते हुए मुफक्किरीन के राय मशबरे से उसका सही इस्तेमाल किया जाए। काम की तकसीमात कर दी जाए। जो जिस चीज़ का अहल हो उसको वही सुपुर्द किया जाए। जिस शोबे का माहिर हो उससे वही काम लिया जाए।

मुस्तक़बिल में लाहे अमल तैयार करके उस पर मुस्तक़िल मिजाज़ी से अमल किया जाए। हालात के पेशे नज़र वक़्तन फ़वक़्तनता तब्दीली भी की जा सके। हुकूमती हर सूबे में अपने कारकुनान तैयार किये जाएं उनको मैदान मे उतारा जाए।

भारतीय मुसलमानों के सियासी हालात

: तारिक़ अनवर मिस्बाही

मुमालिक ए आलम में सबसे ज़्यादा मुसलमान इंडोनेशिया में आबाद हैं। उसके बाद मुसलमानों की सब से बड़ी तादाद भारत में है। भारतीय मुसलमानों की मज़लूमियत की दास्तान भी बहुत तवील है। 1857 में सल्तनत ए मुग़लिया के ज़वाल से लेकर आज तक मुसलमानाने हिन्द रोज़ बरोज़ मुश्किलात में मुब्तिला होते जा रहे हैं। बर्तानवी अहद में हुकूमती सतह पर अंग्रेज़ों ने मुस्लमानों पर ज़ुल्म ढाया और सल्तनत ए मुग़लिया के अहदे ज़वाल से आज तक यहां की पड़ोसी अक़वाम ने उन्हें परेशान कर रखा है। मुख़तलिफ़ तरीकों से क़ौमे मुस्लिम पर ज़ुल्मो सितम ढाया जाता है।

पौने दो सदी से भारतीय मुसलमान अपने वुजूद और बक़ा की जंग लड़ रहे हैं। अब वो इस मंज़िल में आ चुके हैं के अपनी शहरियत का तहफ़्फ़ुज़ और अपनी जान व माल, आल,औलाद, दुकान व मकान, मसाजिद व मदारिस की हिफ़ाज़त व बक़ा के लिए गैरों के सामने गिड़गिड़ाते फिरें।

मुख़्तलिफ़ इंतिख़ाबात में सियासी पार्टियां मुस्लिम उम्मीदवारों को टिकट देती थीं। चंद सालों से यह देखने में आ रहा है के ग़ैर मुस्लिम वोट दहिंदगान मुस्लिम

उम्मीदवारों को वोट नहीं देते। उनके हार जाने के सबब पार्टी भी बसा औक़ात हुकूमत साज़ी से दूर रह जाती है।

गुज़िश्ता बिहार असेम्बली इंतिख़ाब 2020 में आर जे डी (तेजस्वी यादव) के बहुत से मुस्लिम उम्मीदवारों को यादव बिरादरी ने वोट न दिया। जिस के सबब क़रीबन दस मुस्लिम उम्मीदवार हार गए। बीजेपी मुत्तहिदा महाज़ ने रियासत में हुकूमत साज़ी कर ली। आर जे डी चंद सीटों की कमी के सबब हुकूमत साज़ी से महरूम हो गई।

बंगाल असेम्बली इलेक्शन अप्रैल 2021 में त्रिणमूल कांग्रेस(ममता बनर्जी) ने शिकस्त के ख़ौफ़ से बहुत से मुस्लिम उम्मीदवारों को टिकट ही न दिया। त्रिणमूल कांग्रेस जीत गयी और ममता ने हुकूमत साज़ी की।

फ़िरक़ा परस्त क़ुव्वतें यही चाहती हैं के क़ौमे मुस्लिम भारत में दूसरे दर्जे के शहरी बन कर रहें। उनके सारे हुक़ूक़ सल्ब कर लिए जाएं। इन लोगों ने मुल्क भर का माहौल इस क़दर ख़राब कर रखा है के ग़ैर मुस्लिम अक़वाम मुसलमानों से नफ़रत करने लगी हैं। क़रीबन 1100 साल तक मुसलमान बर्रे सग़ीर पर हुक्मरानी करते रहे। आज मुसलमानों की हालते ज़ार देखकर सख़्त अफ़सोस होता है।

भारत के अक्सर मुस्लिम सलातीन ने अपनी सल्तनत व हुकूमत के फ़रोग़ व इस्तेहकाम के लिए सरतोड़ कोशिशें कीं, लेकिन तब्लीग़े इस्लाम और फ़रोग़े दीन की तरफ़ ज़्यादा तवज्जो न दे सके। हज़राते सूफ़ियाए किराम عليهم الرحمة

و الرضوان ने मशक़्क़त व जां फ़िशानी करके तब्लीग़े दीन का फ़रीज़ा अंजाम दिया। कुरून ऊला में जो इलाक़े मुसलमानों के क़ब्जे में आए, उन तमाम इलाक़ों में वहां के बाशिंदों ने मज़हबे इस्लाम क़ुबूल कर लिया। भारत के जिस इलाक़े को मोहम्मद बिन क़ासिम (696-715) ने फ़तह किया था। आज भी उन इलाक़ों में मुसलमानों की अक्सरियत है। आज वो तमाम इलाक़े पड़ोसी मुल्क के पास हैं। मौजूदा भारत के बहुत से इलाक़ों में भी मुस्लिम अक्सरियत है लेकिन महकूम क़ौम, अक़ल्लियत में हो या अक्सरियत में, उस पर अहले हुकूमत और हाकिम क़ौम का ज़ुल्मो जबर किसी से पोशीदा नहीं।

भारत में न मुसलमानों की कोई बड़ी सियासी पार्टी है, न ही मुस्तक़बिल क़रीब में उसकी उम्मीद नज़र आती है। चंद सियासी लीडरान दीगर पार्टियों में ज़रूर मौजूद हैं लेकिन अब हालाते हाज़िरा को देखकर कोई सियासी पार्टी मुसलमानों को टिकट देना नहीं चाहती। इस तरह रफ़्ता रफ़्ता सियासत से मुसलमान बाहर होते जाएंगे। मुसलमानों के खिलाफ फैलाई नफ़रतों को ख़त्म करने के लिए कुछ यूट्यूब चैनल्स बनाए गए हैं। कुछ बेवसाइट्स भी तश्कील दी गई हैं, लेकिन जिस मुनज़्ज़म अंदाज़ में मुनाफ़रत की गरम बाज़ारी है, इस अंदाज़ में काम होना मुश्किल है। मेनस्ट्रीम मीडिया भी नफ़रत फैलाने में शरीक है और बहुत से हुकूमती अहलकार उसकी पुश्त पनाही करते हैं।

हमने भी 20 मई 2021 को "पैग़ामे अमन रिसर्च कमेटी" के नाम से एक कमेटी तशकील दी है। यह एक सोशल मीडियाई प्रोग्राम है। दीगर अदयान व मज़ाहिब

की मज़हबी किताबों में जो मज़हबे इस्लाम, पैग़म्बरे इस्लाम हुज़ूरे अक़दस ﷺ और क़ुरआने मुक़द्दस के बारे में उम्दा बयानात हैं। इसी तरह ग़ैर मुस्लिम मज़हबी, सियासी व समाजी लीडरों और दानिशवरों ने मज़हबे इस्लाम, पैग़म्बरे इस्लाम हुज़ूरे अक़दस ﷺ, क़ुरआने मुक़द्दस, इस्लाम के उसूल व क़वानीन और क़ौमे मुस्लिम से मुताल्लिक जो मुंसिफ़ाना तास्सुरात पेश किए हैं उनको नक़ल करके हिन्दी और इंग्लिश ज़बान में मज़ामीन रक़म किए जाते हैं और सोशल मीडिया पर अपलोड किए जाते हैं ताकि कुछ ग़लत फ़हमियां दूर हों। अल्लाह तआला क़ुबूल फ़रमाए और मज़ीद क़ुव्वत व ताक़त अता फ़रमाए। आमीन

कोरोना वायरस और लाकडाउन के सबब एन आर सी का मुआमला अभी मुल्तवी हो चुका है लेकिन ख़त्म नहीं हुआ है। लाकडाउन की मुद्दत ही में मथुरा, काशी का मुआमला भी गरम रहा। मुआमला कोर्ट तक जा चुका है। यूपी में मुतअद्दिद मसाजिद को हुकूमती अहलकारों ने मुनहदिम कर दिया। मुल्क के मुख़तलिफ़ इलाकों में माबलिंचिंग के मुआमलात भी दरपेश हुए। ख़्वाह मुल्क में कैसे ही बदतरीन हालात हों, इन फ़ितना परवरों का ज़ुल्मो सितम ख़त्म नहीं होता। फिर इन्तेहाई बेहयाई और बेशर्मी के साथ कहते हैं के मुसलमान दहशतगर्द हैं। ख़ामोशी के सबब हम पर आयद-करदा इल्ज़ामात तो हरगिज़ ख़त्म नहीं सकते। सुकूत तोड़ना होगा। मुनज़्ज़म और मुस्तहकम अंदाज़ से पेश क़दमी करनी होगी। चन्द फ़ितना परदाज़ों के सबब मुल्क भर का माहौल ख़राब हो चुका है।

यूपी में अगले साल असेम्बली इलेक्शन भी होने वाला है। सियासी पार्टियां मंसूबा साज़ी कर रही हैं। सेक्युलर पार्टियां भी अपनी लिस्ट से मुस्लिम उम्मीदवारों के नाम हज़फ़ करा रही हैं। अभी कुछ फाइनल नहीं हुआ है, लेकिन अंदाज़ा यही है के चंद मुस्लिम उम्मीदवारों के नाम रखे जाएंगे ताकि मुसलमानों की तरफ़ से ऐतराज़ न हो।

सियासत के अलावा दीगर शोबाजात में भी मुसलमानों की हालत क़ाबिले रहम है। क़ौमे मुस्लिम का मज़हबी तबक़ा भी अब सियासत व दीगर ज़रूरी उमूर की जानिब मुतवज्जेह हो रहा है, लेकिन वो अभी किसी मैदान में महारत व मुमारसत से दूर है। ऐसी सूरत में लाज़िम है कि मुस्लिम दानिशवरों का तबक़ा पेश क़दमी करे और क़ाबिले अमल मंसूबा साज़ी करे।

ख़ुदा ने आज तक उस क़ौम की हालत नहीं बदली

जिसे न हो ख़्याल ख़ुद ही अपनी हालत बदलने का।

मोहर्रम उल हराम की मुरव्वजह बिदआत और खुराफात

: मुहम्मद फिरोज़ आलम अ़लाई

मज़हब और रस्म दोनों का ताल्लुक हयात ए इंसानी से है। मज़हब एक ऐसे ख़ास रंग में रंगा हुआ है जो इंसानी ज़िंदगी की तस्वीर पेश करता है। इसीलिए मज़हब और रुसूम का आपस में बड़ा गहरा ताल्लुक है बल्कि बहुत से रुसूम ऐसे मज़हब पर मबनी हैं। मसलन रस्मो-रिवाज की बुनियाद कुरआने मजीद की आयत से मफहूम हो सकती है

"अफव और दरगुज़र से काम लें और जाहिलों से न उलझें"

उर्फ ए आम में मुफस्सिरीन के नज़दीक वो तमाम अक़्ली और रिवाजी, अच्छी बातें दाखिल हैं जो मज़हब ए इस्लाम के बुनियादी उसूल के ख़िलाफ़ न हो और उसके खिलाफ होंगी तो उनको तस्लीम नहीं किया जाएगा।

इस्लाम सरज़मीन ए अरब में तुलूअ हुआ जब तक वहाँ की हुदूद में रहा तबतक महदूद रहा, उस वक्त तक मुस्लिम समाज और सोसाइटी, मुआशरा और उनकी तर्ज़ ए जिंदगी बिल्कुल सीधा-सादा, पाक और साफ़ और हर किस्म की रुसुमात और खुराफात से महफ़ूज़ रहा।

अरब से निकलते ही जैसे दूसरे मुल्कों में पहुंचा तो वहां की तहज़ीब और सकाफत का असर इस्लाम में बढ़ना शुरू हो गया खुसूसन सर ज़मीन ए हिंद! क्यूंकि हिन्दुस्तान में बेशुमार क़ौमों के इख्तेलाफ और तहज़ीबों के मिलाप से मुख्तलिफ रुसूम ने जन्म लिया। बर्रे सगीर में आने वाले मुसलमान मुख्तलिफ मुल्कों से ताल्लुक रखते थे उनमें पाए जाने वाले रुसूमात और खुराफात भी मुख्तलिफ थे।

किसी का यौमिया तो किसी का माहाना तो किसी का सालाना, न मामलात उन की ज़िन्दगी का हिस्सा बन सके और न उनके मामलात उनकी ज़िंदगी का जुज़ बन सके। ये बड़े ही इहतिमाम के साथ उन रुसूमात को अदा करते रहे।

मुरव्वजह बिदआत और खुराफात:

माहे मोहर्रम उल हराम के अंदर पाई जाने वाली गलत रुसूमात और खुराफात और बिदआत हैं जिन के सबब इस माह ए मुकद्दस की न सिर्फ बेहुरमती होती है बल्कि इस्लामी अक़दार का खुल कर मज़ाक़ भी उड़ाया जाता है सिर्फ शोहदा ए कर्बला की याद मनाने की आड़ में ऐसे गैर शरई काम सर अंजाम दिए जाते हैं जो इस्लामी तालीमात के सरासर मनाफी हैं।

चूंकि लोग! मोहर्रम का चांद देखते ही और बिल ख़ुसूस दस मोहर्रम उल हराम में नाम निहाद मुहब्बत की बुनियाद पर सियाह कपड़े ज़ेबे तन करते हैं, सियाह

झण्डा बुलंद करते और ताज़िया बनाकर शहर-शहर, गाँव-गाँव नोहा और मातम करते फिरते हैं फिर उसके सामने सजदा करना, बच्चों को मोहर्रम का फकीर बना कर भीख मंगवाना, फिज़ूल खर्च करना, मातम करना, कपड़े फाड़ना, नोहा करना, रोना, सीना पीटना, नाचना कूदना, रक्स करना, मर्द और औरत का एक साथ मजलिस और महाफिल में बैठना, झूठे वाकियात बयान करना, इमाम कासिम की मेहंदी रचाना, हज़रत अली, हसनैन करीमैन या दीगर बुज़ुर्गों की तस्वीर बनाना, उनके सामने सजदा करना, एहतिराम करना, उनको हकीकत का रंग देना, इस माहे बरकत में शादी बियाह और दीगर तक़रीबात को ममनूअ, नहूसत समझना और इस तरह के दीगर खुराफात का बर्रे सगीर में मनाया जाना, अहले फिक्र के लिए एक लम्हा ए फिक्रिया है। ये सब मन गढ़त और बिदआत और खुराफात पर मबनी अफआ़ल हैं जोकि तालीमी मैदान से दूरी, लाइल्मी के शिकार के सबब हैं।

तहक़ीक़ी जाएज़ा:

इन खुराफात के सिलसिले में शाह वली-उल्लाह मुहद्दिस ए देहलवी फरमाते हैं:

ऐ बनी आदम तुम ने इस्लाम को बदल डालने वाली बहुत सी रस्में अपना रखी है मसलन तुम दसवीं मोहर्रम को बातिल किस्म के इज्तेमा करते हो कई लोगों ने इस दिन को नोहा मातम का दिन बना लिया है हालांकि अल्लाह की मशीयत से हादसे हमेशा रूनुमां होते रहते हैं, सय्यदुना इमाम हुसैन रदी अल्लाहु तआला अन्हु इस दिन मज़लूम

शहीद किए गए, तो वो कौन सा दिन है जिस में कोई ना कोई अल्लाह का नेक बंदा फौत नहीं होता लेकिन ताज्जुब की बात ये है कि सानेहा ए शहादत को खेल कूद की चीज़ बना लिया, तुमने मातम को ईद के त्योहार के तौर पर बना लिया गोया इस दिन ज़्यादा खाना पीना फर्ज़ है और नमाज़ों का तुम्हें कोई ख्याल नहीं जो कि फर्ज़ ए ऐन हैं, उनको तुमने ज़ाया कर दिया है, ये लोग मन गढ़त कामों में मशगूल रहते हैं, जान बूझ कर नमाज़ें ज़ाया कर रहे हैं इसकी कोई फिक्र नहीं है"

हाफिज इब्ने कसीर फरमाते हैं:

ये (मातमी मजालिस वगैरह) की रस्में इस्लाम में इनकी कोई ज़रूरत नहीं, वाक़ई अगर ये अच्छी चीज़ होती तो खैर उल कुरून और उसके इब्तिदाई और बेहतर ज़माने के लोग इसको जरूर करते वो इसके सबसे ज़्यादा अहल थे

(अल-बिदाया वन-निहाया)

हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी अलैह रहमा फरमाते हैं:

कि राफज़ियों (यानी दुश्मनाने सहाबा) की मजलिस में मुसलमानों को जाना, मर्सिया यानी नोहा सुनना हराम है, उनकी नियाज़ की चीज न ली जाए ये नियाज़ नहीं वो ग़ालिब निजासत से खाली नहीं होती कम से कम उनके नापाक क़ल्तीन का पानी ज़रूर होता है और वहां की हाज़िरी सख्त ममनूअ़ है, उसमें शिरकत मूजिबे लानत है।

मोहर्रम उल हराम में सब्ज़ और सियाह कपड़े अलामत ए सोग हैं और (इस्लाम में सिर्फ तीन दिन सोग है जोकि कर्बला के बाद मुसलमानों ने मना लिया) और सोग हराम है।

(फतावा रज़विया जदीद एडिशन)

क़ारेईन! ये कानून तो अटल है कि इस दारे फानी से हर एक को कूच करना है, और हर नफ्स को मौत का मज़ा चखना है, और उससे किसी को छुटकारा नहीं, चाहे नबी हो या वली।

लेकिन बाज़ अमवात के वाकियात कुछ ऐसे होते हैं जिनका हौलनाक मंज़र देखकर रूहें कांप जाती हैं, जिस्म थम जाता है, क़लम रुक जाती है, हुज़्न और मलाल की दास्तान खून के आंसू रुलाती है, इन्हीं दास्तानों में एक दास्तान जोकि सब पर भारी है वो कर्बला की तारीख है, जिसने इस्लाम की आबरू को बचाया, नबी के दीन को घर घर फैलाया, दुश्मनाने इस्लाम के नापाक अज़ाइम और मकासिद को नेस्त-ओ-नाबूद कर दिया, मोअर्रिखीन की रूह पुकार उठी:

कत्ल ए हुसैन असल में मर्ग ए यज़ीद है

इस्लाम ज़िंदा होता है हर कर्बला के बाद।

हर्फ ए आखिर:

मोहतरम क़ारेईन! आईए मोहर्रम उल हराम के मुबारक और मसऊद मौके पर हम हुसैनी अहद करें कि मोहर्रम उल हराम की मुरव्वजह बिदआत और खुराफात

का खात्मा हो, हुसैनी पैगाम आम हो और उनके फुयूज़ो बरकात से हम सब मालामाल हों।

फितरत क्या है?

: अनस बन्दियालवी

सवाल: इस्लाम दीने फितरत है इसका क्या मफहूम है?

अल्लामा अनस बन्दियालवी: फितरत का लुगवी मायना है "पैदाइश" (पैदा करना)। किसी चीज़ के फितरी होने का मफहूम ये है कि "अल्लाह तआला ने जब इंसान को पैदा किया तो उस चीज़ को इंसान की मिट्टी और बुनियाद में शामिल कर दिया और इस्लाम दीने फितरत है इसका मफहूम ये है कि " तालिमात ए इस्लामिया भी फितरत से मुताज़ाद नहीं हो सकतीं यानी अल्लाह तआला ने जो चीज़ें इंसान की मिट्टी और बुनियाद में शामिल की हैं, इस्लामी एहकाम उसी के ऐन मुताबिक हैं"

मसलन इंसान की फितरत है कि वो "मदनी-उत्तबाअ़" है दूसरों के साथ मिल जुल कर रहता है, चुनान्चे खानदानी, मुआशरती और सियासी निज़ाम इसका फितरी तकाज़ा है,लिहाज़ा इस्लाम ने इसके मुताबिक क़वानीन वाज़ेह कर दिए, इसके बरअक्स मगरिब में अबाहियत और इसाईयत में रहबानियत फितरत के बर खिलाफ है।

सवाल: कहते हैं कि फितरत नहीं बदलती लेकिन हम देखते हैं कि इंसान फितरत से हट रहा है, मज़कूरा उसूल के मुताबिक ऐसा होना नहीं चाहिए?

अल्लामा अनस बन्दियालवी: उसूल दुरुस्त है, फितरत तबदील नहीं हो सकती, अलबत्ता फितरत और आदत का मुकाबला होता रहता है जब हमारी आदत ग़ालिब आ जाए और फितरत मगलूब हो जाए तो फिर कह देते हैं कि " फितरत बदल गई है", इसको मिसाल से समझते है कि, बाज़ जानवरों की फितरत है कि वो रात में जागें और दिन में सोयें, जबकि इंसान की फितरत है कि वो रात में सोये और दिन में जागे, इसी बिना पर नौ-मौलूद बच्चे बगैर किसी के उठाए सुबह उठ जाते हैं लेकिन माहौल से आदतें तबदील हो जाती हैं, फिर रात को जागते है और दिन में सोते हैं, तो इंसान जब आदत को फितरत के तकाज़ों पर ग़ालिब कर देता है तो हम समझते हैं कि फितरत बदल गई है, ये आदत और फितरत को खल्त-मल्त करके एक समझना है और इसी गलती से बचना है।

सवाल: जब इस्लाम फितरी दीन है तो इसके एहकामात पर अमल करने में दुश्वारी क्यूँ होती है?

अल्लामा अनस बन्दियालवी: जनाब किसी फितरी काम के लिए ये ज़रूरी नहीं के इसमें ज़र्रा बराबर दुश्वारी न हो, जैसे कमाना, इंसान की फितरत का लाज़िमी तकाज़ा है, ताकि वो अपनी माद्दी ज़रूरियात को पूरा कर सके, कौन नहीं जानता कि इस फितरी अमल के लिए कितनी मशक्कतें झेलना पड़ती हैं, नतीजतन दुश्वारी, फितरत के ख़िलाफ़ नहीं अलबत्ता ऐसी दुश्वारी जो न-काबिले ए बर्दाश्त

हो वो फितरत से ज़रूर टकराती है और दूसरी जानिब अगर किसी काम में थोड़ी सी मेहनत मशक्कत को निकाल दिया जाए तो ये भी फितरत के मुताबिक नहीं, चुनान्चे इस्लामी एहकामात दोनों जानिब की रियायत करते हुए हमेशा मुतावस्सित रहते हैं।

सवाल: अक़्ल और फितरत का आपस में क्या ताल्लुक़ है? और दोनों का दायराकार क्या है?

अल्लामा अनस बन्दियालवी: अक़्ल और फितरत जुदा जुदा हैं, बल्कि अक्ल बसा औकात फितरत की मुखालफत भी करती है, और दोनों का दायरा कार भी मुख्तलिफ है।

तफ़सील ये है कि जिस तरह हवास ए ख़म्सा और अक़्ल का दायरा कार जुदा है, उसी तरह अक़्ल और फितरत का भी अलग है, मसलन आपके सामने शर्बत रखा जाये और कहा जाये आंखें बंद कर के अक़्ल से उसका रंग बताए? अक़्ल अपनी कुव्वत और वुसअत के बावुजूद उसका रंग नहीं बता सकती; क्यूंकि ये अक़्ल के दायरे मे दाखिल नहीं, दूसरे रुख पर रेतीली ज़मीन पर पाँव के निशानात आंखों से देखे जा सकते हैं मगर जो फर्द या अफराद वहाँ से गुज़रे हैं, वो किस नाव से थे? कितने थे? बगैरह, उन सब का देखना नज़र के लिए मुमकिन नहीं, अलबत्ता अक़्ल इन सवालात के जबावात देने की कुदरत रखती है।

जब हवास और अक़्ल का दायरा ए कार समझ आ जाए तो फितरत और अक़्ल का भी मवाज़ना आसान है, फितरत जिबिल्ली है, तब्दील नहीं हो सकती, लेकिन अक्ल, फितरत को मगलूब करने की कोशिश करती रहती है, कभी न काम तो कभी कामयाब,

मसलन: हम पहले भी बता चुके कि कमाना फितरते बनी आदम है और कमाने के लिए कोशिश, मेहनत और मशक्कत भी ज़रूरी है, कभी अक़्ल इसके हुसूल के लिए इन्तेहा दर्जे की कोशिश का हुक्म करती है कि किसी का ख्याल न करो, न घर, न सेहत , न खाना, न पीना, न बच्चे बस एक ही जुस्तजू रखो कि ज़्यादा से ज़्यादा माल कमा लिया जाए, और कभी अक़्ल आला दर्जे की अदमे कोशिश का हुक्म करती है कि जिंदगी ऐश से बसर करो, कमाने की फिक्र सेहत को ख़राब कर देती है दूसरों की कमाई पर जीना ही फन है।

खुलासा ये है कि फितरत और अक़्ल एक सी नहीं है, और ये सवाल दरअसल इस्लाम और अक़्ल के टकराव का है, मज़कूरा मिसाल से ये बात वाज़ेह हो गई कि अक़्ल कभी फितरत के ख़िलाफ़ हुक्म दे सकती है तो अक़्ल इस्लाम के ख़िलाफ़ भी हुक्म दे सकती है, लिहाज़ा नाकिसे अक़्ल पर एतिमाद से लाखों दर्जा बेहतर है और उसूल और हक़ यही है कि सौ फीसद दुरुस्त इस्लामी एहकामात पर अमल किया जाए, अक़्ल को वही का ताबेअ़ बताया जाए, अक़्ल को शरियत की लगाम दी जाए।

सवाल: इस्लाम दीने फितरत है उसे आसान मिसाल से समझा दें?

अल्लामा अनस बन्दियालवी: इस सिलसिले में दो मिसालें क़ारेईन की नज़र करता हूं।

(1) जान की हिफाज़त फितरत ए इंसानी है, चुनान्चे जान जाने के असबाब पर भी रुकावट और सद्देबाब ज़रूरी है, लिहाज़ा इसी बुनियाद पर ट्रैफिक कानून बनाए गए, तेज़ रफ्तार और गलत सिम्त आने पर पाबंदी, जुर्माना, सिग्नल की पासदारी और हेल्मेट पहनने पर सख्ती बगैरह, यानी असल है जान की हिफाज़त, अलबत्ता जान ज़ाया होने के असबाब को रोकना भी फितरत है, इसी तरह इस्लाम भी दीन ए फितरत है, वो बुराई और उसके असबाब पर भी पाबंदी लगाता है, हिफाज़ते इज्ज़त और नसब के लिए ज़िना की मुमानियत है, लिहाज़ा ज़िना के असबाब पर भी इस्लाम के सख्त एहकाम हैं, पर्दा और नज़रों की हिफाज़त, हद्दे क़ज़फ, गुफ़्तगू में सख्ती, अकेले सफर की मुमानियत बगैरह।

(2) बाज़ मरीज़ ऐसे होते हैं कि अगर उनके जिस्म पर कोई पीप वाला दाना हो जाए तो वो खत्म नहीं होता बल्कि बढ़ता रहता है और पूरे जिस्म में फैल कर मौत का सबब बनता है, अतिब्बा का मशविरा यही होता है कि जिस्म के उस हिस्से को काट दिया जाए और दीगर आज़ा और जान की हिफाज़त की जाए, इस मशविरे को हर शख्स दानिशमन्दाना मशवरा ही समझता है, इस्लाम में जिहाद का नज़रिया यही है कि चंद शर पसंद अनासिर जो हक़ के फैलने में रुकावट हैं, ज़ुल्म और सितम का पहाड़ तोड़ रहे हैं इन्हें कैफिर ए किरदार तक

पहुंचाया जाए और मज़लूमों की मदद की जाए, हक़ फैलाने के रास्ते हमवार किए जाएं।

बद मज़हब मौलवी और हमारी अवाम

: मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

हर मुसलमान के लिए ये ज़रूरी है कि वो इल्म ए दीन सीखने के लिए एक सुन्नी सही उल अकीदा आलिम ए दीन का इंतखाब करे वो चाहे कुरान का इल्म हो या हदीस का, हराम और हलाल का इल्म हो या अक़ाइद और आमाल का हर शोबे में उसे एक सुन्नी उस्ताद की ज़रूरत है।

जब से लोगों के हाथों में मोबाइल आया है और उसके ज़रिये सोशल मीडिया फेसबुक, यूट्यूब, व्हाटसएप, बगैरह का लोगों ने इस्तेमाल करना शुरू किया है तो उस से फायदे की बजाये नुकसान के इमकानात ज़्यादा हैं। मैं यहां दुनियावी नुकसान का ज़िक्र न करते हुए दीनी नुकसान की बात करूंगा।

मिसाल के तौर पर जब कोई मुसलमान मोबाइल पर यूट्यूब का इस्तेमाल करता है तो किसी मसअले के बारे में जानने के लिए यूट्यूब पर उस मसअले को तलाश करता है वो मस्जिद के इमाम की तरफ या किसी किताब की तरफ रुजू नहीं करता अब यूट्यूब पर इस मसअले को बयान करने के लिए दर्जनों उलमा मौजूद हैं उन उलमा में सुन्नी उलमा भी हैं और बद मज़हब भी, लेकिन एक आम मुसलमान इसका इल्म नहीं रखता कि कौन सही है कौन गलत? क्यूंकि ज़ाहिरी

शक़्ल और सूरत सब की एक जैसी ही होती है तो अगर वो इस मसअले के लिए किसी सुन्नी आलिम के बयान को देखे तब तो खैर ही खैर है लेकिन गलती से उसने किसी बद मज़हब को सुन लिया तो वो उसी पर अमल कर लेता है और लोगों से भी वही मसअला बयान करता है ये एक फिक़्ही मसले की बात मैंने की, और अगर मसअला अक़ाइद का हुआ जैसे अल्लाह तआला के ताल्लुक़ से कोई सवाल हो या इल्म ए गैब ए रसूल ﷺ के ताल्लुक से हो या इख़्तियारात ए मुस्तफ़ा ﷺ के ताल्लुक से हो या नबी ए करीम ﷺ के जो औसाफ़ ए हमीदा हैं उनके ताल्लुक से हो। सहाबा और अहले बैत के ताल्लुक से हो, औलिया किराम के ताल्लुक से हो इसके अलावा शिर्क और बिदअत, तक़लीद, वसीला, नूरो बशर, करामात बगैरह के ताल्लुक से हो तो ये मसाइल बहुत पेचीदा है इन मसाइल में अगर यूट्यूब से किसी बद मज़हब को सुनता रहा तो गुमराह होने के रास्ते खुल जाते हैं।

कॉलेज और यूनिवर्सिटी के तलबा के हालात:

कॉलेज और यूनिवर्सिटी के तलबा इन नाज़ुक मसाइल में सोशल मीडिया पर बहस और मुबाहिसा करते नज़र आते हैं और ये सब यूट्यूब के मुकल्लिद होते हैं मसाइल को समझना कोई नहीं चाहता न कोई किताब को खोल कर दो लफ्ज़ पढना चाहता है बस जो यूट्यूब पर किसी बद मज़हब मौलवी ने पढ़ा दिया वही इनके लिए सनद होता है।

इसी वजह से नौजवान असल दीन से हटता जा रहा है वो दीन के मामले में शरियत का ताबेअ़ नज़र नहीं आता दीन के मामले में अगर फिक्र आज़ाद हो जाए जो जिस का मन चाहे वो करने लगे जो जिसको सुनना चाहे उसे सुनने लगे और शरियत को पस ए पुश्त डाल दिया जाए, शरियत तो कहती है कि फलाह बंदा बद मज़हब है उसके पास मत जाओ उसे मत सुनो उससे गुमराह हो सकते हो लेकिन हट धर्मी का ये आलम है कि जो नफ्स चाहे बंदा वो करने लगे तो फिर हालात दुरुस्त कैसे हो सकते हैं? नौजवानों ने यूट्यूब के कुछ मौलवियों को मासूम अनिल-खता समझा हुआ है कि जो वो कहेंगे वही सच है उनके अलावा सब झूट है चाहे उसकी बात कुरआन और हदीस के ख़िलाफ़ ही क्यूँ न हो। जब उसने अपने अल्फाज़ों का जादू नौजवानों के ऊपर चला कर कोई बात दिमाग में डाल दी अब वो बात गलत कैस हो सकती है?

ख्वातीन की बे-राह-रवी:

ख्वातीन की बात करो तो वो इस मामले में बे-राह-रवी का शिकार हैं ख्वातीन इमोशनल ब्लैकमेल(emotionally blackmail) बहुत जल्द हो जाती हैं अगर कोई मौलवी रो कर कोई बात बयान कर दे तो ख्वातीन उस मौलवी को बेहतर समझने लगती हैं और सिर्फ उसके बयानात सुनती ही नहीं स्टेटस पर लगाना, दूसरों को इरसाल करना ये सब चलता है जब उनसे सवाल किया जाए कि उनके बयानात क्यूँ सुनती हो? ये तो बद मज़हब है तो कहती हैं ये तो बहुत अच्छी

बातें करते हैं इन्हें सुनने में क्या दिक़्क़त है? अगर बयान के दरमियान में वो मौलवी कोई गलत बात भी कह जाये तो उन्हें इसका शऊर नहीं होता वो तो कोई सुन्नी आलिम या आलिमा ही गलती को पकड़े।

हर अच्छी बात करने वाला इंसान सही नहीं होता, कोई भी अच्छी बात किसी के कहने से अच्छी नहीं होती वो तो पहले से ही अच्छी थी अगर कोई काफ़िर कहे कि नमाज़ मुसलमानों पर फ़र्ज़ है मुसलमानों को नमाज़ पढना चाहिए इस से उन्हें सवाब मिलता है अब कोई मुसलमान उस काफिर को इस बात की वजह से अच्छा कहने लगे तो ये तो सरासर नाइंसाफी है ये तो अल्लाह का फरमान है कि नमाज़ मुसलमानों पर फर्ज़ है तो काफिर की इसमें क्या खुसुसियत?

इसलिए ज़रूरी है कि किसी भी मसअले में यूट्यूब को न देखा जाए बल्कि पहले किसी सुन्नी सही उल अक़ीदा आलिम की तरफ रुजूअ़ किया जाए या जो किसी सुन्नी आलिम ए दीन की किताब से मसाइल देखने की सलाहियत रखता हो तो उधर रुजूअ़ करे।

मैं ये नहीं कहता कि यूट्यूब पर सुन्नी आलिम मौजूद नहीं इस पर भी मौजूद हैं मगर हर शख्स को इस बात का इल्म नहीं है कि हमें किस आलिम से मसअले का हल सुनना चाहिए? जिस को इल्म हो उसके लिए ये मुफीद साबित हो सकता है मगर जिसे इल्म ही न हो उसके ईमान के लिए ये मर्ज साबित होगा।

आईए अब आप के सामने एक हदीसे पाक पेश करते हैं उस से वाज़ेह हो गया कि कुर्ब ए कयामत मुसलमान अपना पेशवा और रहनुमा किसे बना लेंगे?

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर से रिवायत है कि हुज़ूर नबी ए करीमﷺ ने फरमाया **अल्लाह इल्म खींच कर न उठाएगा कि बन्दों से खींच ले बल्कि उलमा की वफात से इल्म उठाएगा ताकि जब कोई आलिम न रहेगा लोग जाहिलों को पेशवा बना लेंगे जिनसे मसाइल पूछे जाएंगे वो बगैर इल्म के फतवा देंगे, गुमराह होंगे, गुमराह करेंगे।**

(مشکاۃ المصابیح، کتاب العلم، ۲۰۶)

मौजूदा ज़माने पर ये हदीस सादिक़ आ रही है सोशल मीडिया यूट्यूब बगैरह पर देखिए जाहिल से जाहिल जिसे दीन का कुछ इल्म भी न हो वो भी दीनी मसाइल बयान करता नज़र आ रहा है,और हमारी आवाम का क्या कहना यूट्यूब के इन जाहिलों को अपना पेशवा समझ बैठी है मसलन इंजीनियर मुहम्मद अली मिर्ज़ा जिस ने अपनी पूरी ज़िंदगी दुनियावी पढ़ाई में सर्फ कर दी फिर चंद उर्दू किताबें पढ़ कर लोगों को मसाइल बताने बैठ गया कुरआन और हदीस की गलत तावीलात करके लोगों को गुमराह करना शुरू कर दिया जिन मसाइल पर 1400 साल से उम्मत ए मुस्लिमा कारबन्द थी आज उसने अपने दोगलेपन से उन मसाइल का रद्द कर दिया लोग उसके मुकल्लिद बनते चले जा रहे हैं खुदा खैर करे।

जब इंसान अपने लिए कपड़ा खरीदना चाहे तो बेहतर से बेहतर दुकान तलाश करता है ताकि कपड़ा बेहतर मिले इसी तरह घर का कोई भी सामान खरीदना हो तो भी बेहतर दुकान को तलाश करता है इसी तरह अपने इलाज के लिए भी बेहतर तबीब को तलाश करता है लेकिन हाय रे मुसलमान! जब दीन की बात

आए तो किसी भी जाहिल को अपना पेशवा बना लेता है सही गलत का तमीज़ नहीं करता जबकि दीन का मामला सबसे ज्यादा नाज़ुक है कि ये ईमान का मसअला है।

रिवायत है हज़रत इब्ने सीरीन फरमाते हैं:

इल्म, दीन है लिहाज़ा गौर करो दीन किससे हासिल करते हो।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب العلم، ۲۷۳)

अहमद यार खान नईमी रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया:

"कि आज लोग बेदीनों से तफ़सीर और हदीस पढ़ कर बेदीन हो रहे हैं"।

क्यूंकि इल्म ए दीन सीखने में उस्ताद का अहम रोल होता है उस्ताद जिस फिक्र का हामिल होगा वैसा ही तालिब ए इल्म हो जाएगा।

बात को खत्म करते हुए बस इतना कहना चाहूंगा कि ऐ मुसलमानों! अपने माज़ी की तरफ पलटो, अपने अक़ीदे दुरुस्त करो कोई भी मौलवी हो उसे कुरआन और हदीस और क़ुरूने ऊला के उलमा और स्वालेहीन की तालीमात की रोशनी में परखो। किसी भी शख्स पर आंखें बंद करके एक दम एतिमाद करना शुरू न कर दो जब तक उसके बारे में पता न हो जाए। जो भी कोई नई बात कहता दिखे तो उस पर अमल एक दम न करो उस पर तहकीक कर लो या किसी मोअ़तमद सुन्नी आलिम से उस ताल्लुक से पूछ लो।

हदीस में है हज़रत अबु हुरैरह रदि अल्लाह अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीमﷺ ने फरमाया के

आखिरी ज़माने में झूठे दज्जाल होंगे जो तुम्हारे पास वो हदीस लायेंगे जो न तुमने सुनी न तुम्हारे बाप दादाओं ने, उनको अपनों से, अपने को उन से दूर रखो वो तुम्हें गुमराह न कर दें फितने में न डाल दें।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، ١٥٤)

अल्लाह हमें बद मज़हब मौलवियों से बचाए और हमारे ईमान की हिफाज़त फरमाए, अल्लाह हमारा हामी और नासिर हो।

About Us:

The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah Tahreek Nizam e Mustafa ﷺ is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized.

Published by:

Tehreek Nizam e Mustafa ﷺ

Contact us: +919675801762, +919720315389

www.nizamemustafa.in